अर्श मल्सियानी

जीवनी और संकलन

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

अर्श मलसियानी

और उनकी शायरी

सम्पादक
प्रकाश पण्डित
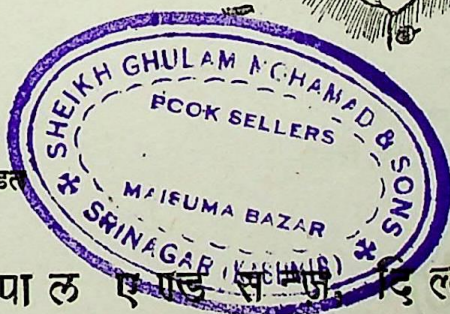
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
जुलाई, १९६१

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

मिला है 'अर्श' ये ज़ौक़-ए-सुख़न मीरास में मुझको
न हो क्यों रश्क के क़ाबिल बयां मेरा ज़बां मेरी

सूत्र से मैंने उसकी शायरी की पृष्ठ-भूमि पर से पर्दा सरकाया। कोई स्वार्थी है, तो है। कंजूस है तो मैंने उसे लख-लुट कहकर साहित्यिक-बद-दयानती नहीं की। और इसीलिए कुछ मित्रों को मुझसे शिकायत भी हुई कि मैंने उनके बारे में कुछ ऐसी बातें लिख दी हैं जो कागज़ पर उतरने योग्य नहीं होतीं। और एक सज्जन ने तो मुझे अदालत का दरवाज़ा दिखाने की भी धमकी दी; लेकिन इस सबके बावुजूद मैंने क़लम से टपकने वाली स्याही में झूठ की बू-बास को पसंद नहीं किया।

श्री बालमुकंद 'अर्श' मल्सियानी का परिचय देने से पूर्व उपर्युक्त भूमिका की आवश्यकता मुझे इसलिए महसूस हुई, कि जब मैंने 'अर्श' के व्यक्तिगत जीवन के अंधेरे पहलुओं की खोज की—उनके बेतकल्लुफ़ दोस्तों से उनके बारे में पूछा; उनसे हुई अपनी मुलाक़ातें याद कीं; उनकी आत्म-लिखित जीवनी पढ़ी और वे लेख भी पढ़े जो उनकी शायरी और शख़्सियत (व्यक्तित्व) पर अब तक प्रकाशित हो चुके हैं—तो मुझे बड़ी 'निराशा' हुई।

कितना सुन्दर मज़ाक़ है, मैंने सोचा, कि उनके पिता[1] बिल्कुल उस आदर्श-पात्र का नमूना हैं, जिसका ज़िक्र मैं ऊपर कर चुका हूँ। और स्वयं 'अर्श' के व्यक्तित्व में किसी दोरंगी की छाया नहीं मिलती। और शायद इसीलिए हज़रत 'जोश'

---

१. श्री 'जोश' मल्सियानी—उर्दू और फ़ारसी के प्रसिद्ध विद्वान् और शायर। भारत सरकार की ओर से उनकी साहित्य-सेवाओं के उपलक्ष में उन्हें अभिनन्दन-ग्रंथ भेंट किया जा चुका है।

मलीहाबादी ने एक बार उनके बारे में लिखा था कि :—

"...न खाने की चीज़ें खाते हैं न पीने की चीज़ें पीते हैं। न सूंघने की चीज़ें सूंघते, न टटोलने की चीज़ें टटोलते, न बरतने की चीज़ें बरतते और न झपट पड़ने की चीज़ों पर झपटते हैं। चारे और घास-फूंस से विटामिन हासिल करते हैं और बेज़रर चरिंद (अहानिकारक पशु) की ज़िन्दगी जीते हैं।"

आप उनको निकट से देखिये—अपनी मुखाकृति, अपने शरीर, और अपने वस्त्रों के आधार पर, वार्तालाप और उलझी हुई समस्याओं को चुटकियों में सुलझा देने के आधार पर, और संसार की प्रत्येक वस्तु पर निरंतर तीस साल से शतरंज को प्रधानता देने के आधार पर वे आपको शायर कम और किसी गांव के पटवारी अधिक मालूम होंगे। इस पर भी जब मैंने उनके उपनाम के बारे में उनसे बात की तो मुझे उत्तर मिला कि "घटिया क़िस्म का तख़ल्लुस रखने से चूंकि शायरी पर उसका असर पड़ने का अन्देशा था इसलिए मैंने 'अर्श' (आकाश या ईश्वर के बैठने का सिंहासन) तख़ल्लुस चुना।" लेकिन इसके साथ ही उन्होंने मुझे यह भी बताया कि "१९२५ ई० में जब मैंने अपनी पहली नज़्म अपने वालिद साहब को इस्लाह (संशोधन) की ग़र्ज़ से दिखाई तो वालिद साहब ने न केवल इस्लाह देने से इन्कार कर दिया बल्कि डांट पिलाई कि शायरी का जौहर (गुण) तुममें मौजूद ही नहीं, इसे छोड़ दो।"

शायरी का जौहर, जैसा कि बाद में सिद्ध हुआ, 'अर्श' में पर्याप्त मात्रा में मौजूद था। उनके पिता ने शायद इसलिए उनकी पीठ न थपथपाई थी कि शे'रो-शायरी में पड़कर उनका

बेटा अपनी शिक्षा से मुंह न मोड़ ले। क्योंकि कुछ ही समय बाद जब किसी व्यक्ति ने 'अर्श' का नाम लिये बिना 'जोश' साहब को यह शे'र सुनाया :

> मरकर भी गिरफ़्तारे - सफ़र[1] है मेरी हस्ती
> दुनिया मेरे पीछे है तो उक़्बा[2] मेरे आगे

तो उन्होंने जी खोलकर दाद दी और कहा कि यह शे'र ज़रूर किसी उस्ताद का है। लेकिन जब उन महाशय से उन्हें पता चला कि शे'र किसी उस्ताद का नहीं, स्वयं उनके पुत्र का है तो एक बार फिर उनके माथे पर बल पड़ गए और उन्होंने यह कहकर शे'र की प्रशंसा करनी बंद करदी कि एक अच्छा शे'र कहने से कोई शख्स शायर नहीं हो जाता। इस प्रकार प्रोत्साहन न मिलने का, 'अर्श' के कथनानुसार, उनपर यह प्रभाव पड़ा कि अपनी नज़्मों-ग़ज़लों पर वे और भी अधिक मेहनत और फिर स्वयं ही प्रत्यालोचन करने लगे। बाक़ायदा इस्लाह किसी से न ली और शनैः-शनैः शायरी के लिहाज़ से मल्सियान जैसी मरुभूमि पर शायर की हैसियत से स्वयं ही अपने पैरों पर खड़े हो गए।

अपने जन्म और जन्म-भूमि के बारे में एक स्थान पर वे लिखते हैं कि "पंजाब के ज़िला जालंधर का एक छोटा-सा क़स्बा, जिसे मेरे पिता अक्सर 'ख़राबाबाद' के नाम से याद करते हैं, मेरा जन्म-स्थान है। इस क़स्बे का नाम है मल्सियान। ज्ञान तथा विद्वत्ता की दृष्टि से इस क़स्बे में मेरे माननीय पिता

---

१. सफ़र में गिरफ़्तार (गतिशील) २. परलोक

से पूर्व कोई व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ जिसे थोड़ा-बहुत भी विद्वान कहा जा सके। २० सितम्बर १९०८ ई० को इसी दूर-दराज़ और असाहित्यिक वातावरण में मेरा जन्म हुआ।"

मल्सियान ही नहीं 'अर्श' की युवावस्था का अधिकांश भाग ऐसे ही असाहित्यिक वातावरण और शे'रो-शायरी की शत्रु नौकरियों में व्यतीत हुआ, जिनसे पिंड छुड़ाने के लिए वे बेतरह छटपटाते रहे—एफ़० ए० में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे कि स्वभाव के प्रतिकूल गवर्नमेंट एन्जीनियरिंग स्कूल की प्रतियोगिता में बैठना पड़ा। दुर्भाग्यवश सफल भी हो गए। दो साल ट्रेनिंग पाई और उसके बाद नहर विभाग में ओवरसियर भी नियुक्त हो गए। मन ने ग्लानि की और मस्तक ने विद्रोह। एक वर्ष के समय में तीन बार त्यागपत्र दिया और अन्तिम बार दृढ़ निश्चय किया कि इस असाहित्यिक वातावरण को पुनः नहीं अपनायेंगे।

यहां से निकले तो 'आस्मान से गिरा खजूर में अटका' के अनुसार उन्हें लुधियाना के औद्योगिक केन्द्र या स्कूल में शिक्षक बनना पड़ा और एक दो नहीं, पूरे बारह वर्ष तक बनना पड़ा। लेकिन इस सब के बावुजूद शे'र कहने का शौक़ या उन्माद बराबर बना रहा और वे इधर-उधर के मुशायरों में भी शामिल होते रहे। इसे श्री गुलाम मोहम्मद (भूतपूर्व गवर्नर-जनरल, पाकिस्तान) ही की कृपा कहनी चाहिए कि उन्होंने 'अर्श' को उस अप्रिय और असंगत वातावरण से मुक्ति दिलाकर दिल्ली के काव्य-जौहरियों के सामने अपनी शायरी के जौहर प्रस्तुत करने का अवसर जुटाया। दिल्ली में 'अर्श'

पहले सप्लाई विभाग में, फिर सौंग एण्ड पब्लिसिटी, फिर लेबर विभाग और उसके बाद मिनिस्ट्री ऑफ़ इन्फ़रमेशन एण्ड ब्रॉडकास्टिंग में नौकर हुए। फिर १९४८ ई० में प्रकाशन विभाग में असिस्टेंट एडीटर नियुक्त हुए और १९५६ ई० में 'जोश' मलीहाबादी (जो उन दिनों इसी विभाग में उर्दू 'आजकल' के एडीटर थे) के पाकिस्तान चले जाने के बाद से एडीटर के पद पर आसीन हैं।

अपनी काव्य-प्रवृत्ति के सम्बंध में 'अर्श' का कहना है कि वे किसी साहित्यिक दल या संघ से सम्बंध नहीं रखते बल्कि पुरातन और नूतन के समन्वय से जो साहित्य जन्म लेता है उसीकी रचना में प्रयत्नशील रहते हैं। यह बात यद्यपि कुछ भ्रमोत्पादक-सी लगती है और किसी भी बिन्दु पर इसके डांडे मिलाए जा सकते हैं; लेकिन 'अर्श' की शायरी का सिलसिलेवार अध्ययन करने वाला कोई भी पाठक इससे भिन्न राय नहीं दे सकता कि अपनी शायरी के प्रारम्भिक काल में तो 'पुरातन और नूतन' के समन्वय की बजाय वे पुरातन ही पुरातन पर ध्यान देते रहे; लेकिन फिर धीरे-धीरे वे पुरातन से केवल वर्णन-शैली और नूतन से आधुनिक काल की समस्याओं के विषय लेने लगे—वे समस्याएं जो उनके समक्ष थीं; देश और जाति के समक्ष थीं; सारी मानवता और पूरी शताब्दि के समक्ष थीं। अतएव भाषा और वर्णन-शैली को एक ओर रख कर जब भी कोई सत्यनिष्ठ कवि या लेखक अपने काल की समस्याओं को लेता है तो उन्हें उनके वास्तविक रूप में ही लेता है और जब वास्तविक रूप में लेता है तो अपनी ज़बान

से वह भले ही इक़रार न करे, उसकी रचनाएँ स्वयं चुग़ली खाती हैं कि उसका सम्बंध अवश्य ही उस साहित्यिक संघ से है जो नया या प्रगतिशील कहलाता है, जो मानव-प्रेमी है और जिसकी सहानुभूतियां भौगोलिक सीमाओं को पार करके विश्व-व्यापी हो जाती हैं।

अपने कविता-संग्रह 'हफ़्त-रंग' की प्रस्तावना में 'अर्श' ने इसका इक़रार भी किया है "आज से क़रीब-क़रीब पच्चीस साल पहले मैंने सौ-फ़ीसदी रिवायती (परम्परागत) शायरी से शे'र-गोई (कविता कहना) शुरू की और अब ऐसे मक़ाम पर पहुंचा हूं कि गो रिवायत का असीर (बन्दी) नहीं लेकिन मेरी तख़लीक़ात (रचनाओं) में रिवायत के अनासिर (तत्व) मफ़क़ूद (अलभ्य) भी नहीं। इतनी समझ-बूझ ज़रूर पैदा हो गई है कि अगर मैं इसी नीम-रिवायती डगर पर इस्तिक़्लाल (धैर्य) से चलता रहा तो यह इस्तिक़्लाल, इस्तिक़्लाल-ए-मर्ग (मृत्यु-धैर्य) बन जाएगा।......अब मेरे दिल-ओ-दिमाग़ पर तब्दीली का एक जुनून (उन्माद) सवार है।"

यह तब्दीली—ग़ज़ल के घिसे-पिटे विषय, और आशियाना, गुलिस्तान, रहबर-रहज़न, मंज़िल, ख़ुदा, नाख़ुदा, कश्ती, गिर्दाब, साक़ी, शराब, मयख़ाना, मन्दिर-मस्जिद, शैख़, ब्रह्मन इत्यादि बासी शब्दों के गिर्द कलात्मक क़लाबाज़ियों से होती हुई उस स्थान पर पहुंच गई, जहां शायर वक़्त के तक़ाज़ों से दामन नहीं बचा पाता और :

किसी की जुस्तजू में खोके दिल को
हर-इक से पूछता हूं दिल कहां है

ऐसे साधारण शे'र कहते-कहते यह कहने पर विवश हो जाता है कि :

यह बता हाल क्या है लाखों का
मुझसे दो-चार-दस की बात न कर

और

खयाल-ए-तामीर के[1] असीरो[2] करो न तखरीब की[3] बुराई
ब-ग़ौर[4] देखो तो दुश्मनी के क़रीब ही दोस्ती मिलेगी

'अर्श' की साहित्यिक दयानतदारी के विषय में यहां मुझे एक घटना याद आ रही है। १९५० का ज़माना था। प्रगतिशील लेखक, उनकी संस्था और उनकी पत्रिकायें राज्य की नज़र में खटक रही थीं। सरकारी कर्मचारियों को ऐसी पत्रिकाओं में लिखने की मनाही तो न थी लेकिन इस बात को पसंद भी न किया जाता था। 'अर्श' सरकारी कर्मचारी थे और मैं प्रगतिशील पत्रिका 'शाहराह' का सम्पादक। मैंने उन से कई बार 'शाहराह' के लिए कोई नज़्म लिखने की प्रार्थना की जिसे वे बड़ी सफ़ाई से टालते रहे। मेरा आग्रह बढ़ा तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वे अपनी मान्यताओं को क्रियात्मक रूप देने में असमर्थ हैं। मैं चाहूं तो इसे बुज़दिली कह लूं लेकिन हक़ीक़त यह है कि वे मेरी पत्रिका के लिए नज़्म नहीं लिख सकते।

मैंने कहा, इस आसानी से टलने वाली आसामी मैं नहीं हूं। आसान नुस्खा यह है कि आप कोई ऐसी चीज़ मेरी पत्रिका

---

१. निर्माण के विचार के २. बन्दियो ३. विनाश की ४. ध्यानपूर्वक

के लिए लिख दीजिये, जिसे मैं स्वयं ही छापने से इन्कार कर दूं। यह प्रस्ताव उन्हें पसंद आया और कुछ दिनों के बाद जो नज़्म उन्होंने मुझे प्रदान की उसका शीर्षक था "एशिया को छोड़ दो"। और उसका पहला बंद था :—

खून चूसा जान ली अब जिस्म भी खाते हो तुम
ऐ सियासी करगसो ! क्यों ज़ुल्म फ़र्माते हो तुम
एशिया के ग़म में क्यों दुबले हुए जाते हो तुम
अब बला से कुछ भी हो, तुमने तो घर को भर लिया,
काम अपना कर लिया

लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो,
एशिया को छोड़ दो

अब तक 'हफ़्त-रंग', 'चंग-ओ-आहंग' और 'आहंगे-हजाज़' के नाम से तीन कविता-संग्रह और 'पोस्ट मार्टम' नाम से हास्य-लेखों का एक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी में भी एक पुस्तक 'मुहावरे और कहावतें' निकली है। रेडियो ब्राडकास्टिंग में बदनामी की हद तक मशहूर हैं और भारत और पाकिस्तान का कोई मुशायरा ऐसा नहीं होता जिसमें 'अर्श' की उपस्थिति अनिवार्य न समझी जाती हो।

चयन
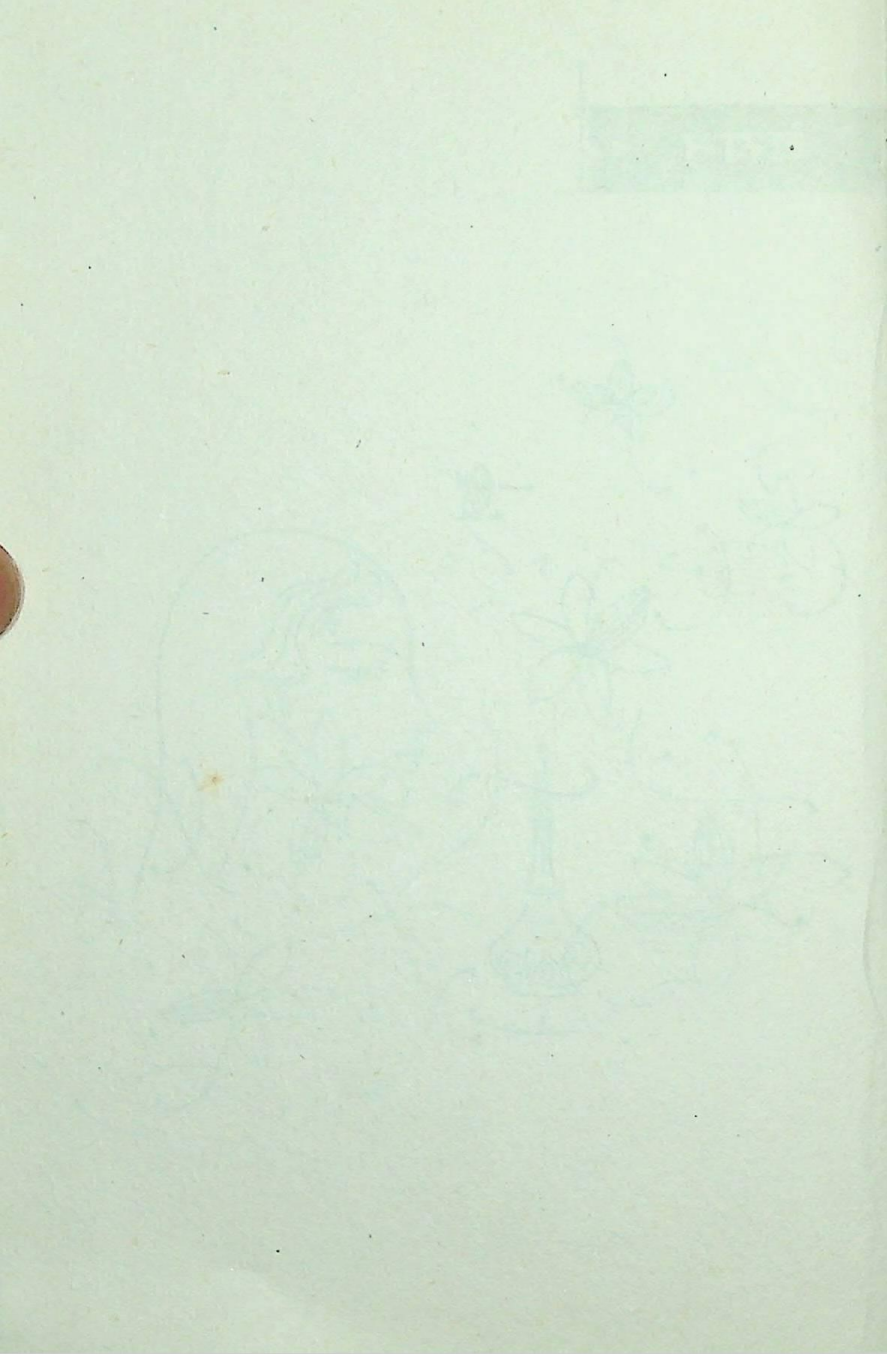
कल रात से

किस क़दर है उनसे मिलने की ख़ुशी कल रात से,
ज़िन्दगी में आ गई है ताज़गी कल रात से।
वा'दा-ए-फ़र्दा पे[1] मुझको आ रहा है ए'तबार,
हो रही है दूर दिल की बेकली कल रात से।
मैं फ़राहम कर रहा हूं[2] ऐश का सामान अब,
हो चुकी है ख़त्म ग़म की ज़िन्दगी कल रात से।
दिल में जो शिकवें थे वो अब हैं पुरानी दास्तां,
बस गई है दिल में इक दुनिया नई कल रात से।
इक तबस्सुम की[3] अदा ने मुझ पे जादू कर दिया,
हो गई है दूर दिल की बरहमी[4] कल रात से।
इस तग़ैयुर के लिए[5] उनको दुआ देता हूं मैं,
मौत थी कल रात तक, है ज़िन्दगी कल रात से।
हो रहा है मेह्रबां मुझ पर वो रश्के-सद-बहार[6],
खिल रही है फिर मेरे दिल की कली कल रात से।
उनका जल्वा ख़्वाब में पुरकैफ़[7] मुझको कर गया,
आंख में आई हुई है नींद-सी कल रात से।

---

१. आने वाले कल के वायदे पर २. जुटा रहा हूं ३. मुस्कान की ४. घबराहट ५. परिवर्तन के लिए ६. सैंकड़ों वसन्त-ऋतुओं के लिए ईर्ष्या की चीज़ (प्रेयसी) ७. आनंदित

आलमे-वहशत[1] था तारी[2] हर तरफ़ कल रात तक,
हर दरो-दीवार में है दिलकशी कल रात से।
बन गया है दिल का हर अरमान इक बज़्मे-निशात[3],
नग़मा-ज़न है[4] 'अर्श' साज़े-ज़िन्दगी कल रात से।
(१६३६)

◇ ◇ ◇

१. घबराहट की स्थिति २. छाई हुई ३. आनन्द-सभा ४. गीत गा रहा है

ये वक्त नहीं अब जाने का !

चलती है हवा-ए-रूहफ़ज़ा[1], ये वक़्त नहीं अब जाने का
पुरकैफ़[2] है रुत, दिलकश है फ़ज़ा[3], ये वक़्त नहीं अब जाने का
हर मन्ज़र-ए-शब[4] है होश-रुबा[5], ये वक़्त नहीं अब जाने का
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम[6] पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

ये चर्ख़ पे[7] लुक्का-ए-अब्र-ए-रवां[8], ये चांद ये तारों का आलम[9]
ये सहन-ए-चमन ये गुल बूटे, ये फूल ये फूलों पर शबनम
ये सर्द हवा, ये सन्नाटा, शाख़ों का गले मिलना बाहम[10]
ऐ हुस्न-ए- मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

ये मस्त फ़ज़ा ये ख़ामोशी, ख़ामोशी का ये इज़्न-ए-तरब[11]
फ़ितरत का[12] सेह्‌र-असर[13] जोबन, इश्रत-अफ़ज़ा[14] ये महफ़िल-ए-शब
जज़्बात का ये पैग़ाम तो सुन, हां देख ये दिल का हुस्न-ए-तलब[15]
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

बाक़ी न रहें जब ज़ब्त-ओ-सुकूं, ऐसे में भी कोई जाता है
जब ज़ोर पे हों जज़्बात-ए-जुनूं, ऐसे में भी कोई जाता है
जब दिल पे बना दे दर्द-ए-दरूं, ऐसे में भी कोई जाता है
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

---

१. प्राण-वर्द्धक वायु २. आनन्दपूर्ण ३. वातावरण ४. रात का दृश्य ५. होश उड़ाने वाला, मस्त कर देने वाला ६. साकार सौन्दर्य ७. आकाश पर ८. उड़ते बादल का टुकड़ा ९. सौंदर्य १०. परस्पर ११. आनन्द का निमंत्रण १२. प्रकृति का १३. जादू का प्रभाव रखने वाला १४. आनन्दवर्द्धक १५. मांगने का सुन्दर ढंग

काफ़िर है जो ऐसे आलम में[1] नश्शे में तरब के[2] चूर न हो
कैफ़ियत-ए-ऐश-ओ-इश्रत से[3] बदमस्त न हो मसरूर[4] न हो
मन्ज़ूर तेरी हर बात मुझे लेकिन तू मुझसे दूर न हो
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

मैं तुझसे नहीं ग़ाफ़िल[5] मुत्लक़[6] मुझसे ये मगर ग़फ़लत[7] कैसी
बातिन में[8] मुहब्बत लाख सही, ज़ाहिर में ये नफ़रत कैसी
जिस अज़्म से[9] रंज मिले मुझको इस अज़्म की अब जुर्रत कैसी
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

जिस शीश-ए-दिल को[10] तोड़ा है उस शीश-ए-दिल को जोड़ भी दे
जिस बात से दिल को ठेस लगे उस बात से रिश्ता तोड़ भी दे
जाने का इरादा मोहलिक[11] है जाने का इरादा छोड़ भी दे
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

है तेज़ हवा-ए-ऐश मगर क्यों तुझको हवा ये रास नहीं
क्यों ग़ुन्चा-ए-उल्फ़त[12] में तेरे दिलजोई की बू-बास नहीं
हर रोज़ नहीं जो ज़िद करता क्यों उसकी ज़िद का पास[13] नहीं
ऐ हुस्न-ए-मुजस्सम पास तो आ, ये वक़्त नहीं अब जाने का

(१९५०)

◇ ◇ ◇

---

१. हालत में २. हर्ष के ३. ऐश की स्थिति से ४. प्रफुल्ल ५. बेखबर ६. बिल्कुल ७. बेपरवाई ८. मन में ९. संकल्प से १०. मन-रूपी दर्पण को ११. घातक १२. प्रेम-रूपी कली १३. आदर, लिहाज़

क़सम

(१)

क़सम उस हुस्न की जिसमें है शोख़ी भी लताफ़त[1] भी
क़सम उस हुस्न की जिसमें है तल्ख़ी[2] भी हलावत[3] भी
क़सम उस हुस्न की सारा ज़माना जिसका शैदा[4] है
क़सम उस हुस्न की राज़-ए-जहां जिससे हुवैदा[5] है
क़सम उस हुस्न की पहली सिफ़त जिसकी है रा'नाई[6]
क़सम उस हुस्न की दर्बां हैं जिसके दर की[7] ज़ेबाई[8]
क़सम उस हुस्न की जिसके लिए बेताब रहता हूं
क़सम उस हुस्न की जिसके हज़ारों नाज़ सहता हूं
क़सम उस हुस्न की जिससे मुरव्वत[9] दूर रहती है
क़सम उस हुस्न की जिससे वफ़ा काफ़ूर[10] रहती है
क़सम उस हुस्न की जिससे है कैफ़-ए-सरमदी[11] हासिल
क़सम उस हुस्न की जिससे है जन्नत की ख़ुशी हासिल
क़सम उस आंख की कैफ़ीयतें[12] जिससे छलकती हैं
क़सम उस आंख की सरमस्तियां जिसमें झलकती हैं
क़सम उस रुख़ की[13] भोलेपन से जो मसहूर[14] करता है
क़सम उस रुख़ की दिल की कुल्फ़तें[15] जो दूर करता है

---

१. कोमलता २. कटुता ३. मधुरता ४. आसक्त ५. प्रकट ६. सुन्दरता ७. दरवाज़े की ८. शृंगार ९. स्नेहशीलता १०. उड़ी हुई, ग़ायब ११. स्थायी आनन्द १२. मस्तियां १३. चेहरे की १४. मुग्ध १५. दुख

क़सम जज़्बात से लबरेज़[१] उस हल्के तबस्सुम की[२]
क़सम उस हिचकिचाहट से भरे ज़ौक़-ए-तकल्लुम की[३]
क़सम उन पुर-ग़ज़ब बेमेह्र दुज़दीदा निगाहों की[४]
क़सम उस शिकवा-ए-बर्बाद की[५] उन सर्द आहों की
क़सम उसकी मोहब्बत की समझना जिसको मुश्किल है
क़सम उसकी जो अपने चाहने वाले से ग़ाफ़िल[६] है
क़सम उसकी, वफ़ाओं में जिसे घुलना नहीं आता
क़सम उस गुल की, कांटों में जिसे तुलना नहीं आता
क़सम उस रात की आशिक़ शब-ए-ग़म[७] जिसको कहते हैं
क़सम उस नाज़-ए-बेजा की[८] जिसे वो रोज़ सहते हैं
क़सम उस शौक़ की जो दिल में रह-रह कर मचलता है
क़सम उस दर्द-ए-दिल की जो नये पहलू बदलता है
क़सम उस प्रेम की जिसकी लगी अब जा नहीं सकती
क़सम उस बात की दिल से जो लब तक[९] आ नहीं सकती
क़सम उन कैफ़-ज़ा[१०] पिछली मुलाक़ातों की रातों की
क़सम उन रस-भरी बातों, पुरानी वारदातों की[११]

---

१. परिपूर्ण २. मुस्कराहट की ३. बात करने की रुचि की ४. भयानक, निर्दयी और तीखी नजरों की ५. व्यर्थ जाने वाली शिकायत की ६. बेखबर ७. ग़म की रात ८. अनुचित नाज़ की ९. होंटों तक १०. मस्ती उत्पन्न करने वाली

क़सम नालों की[1] जो दिल से निकलने को तरसते हैं
क़सम अश्कों की[2] जो ग़म में घटा बनकर बरसते हैं
क़सम उस हिज्र की[3] जिसमें फ़ुग़ां का[4] शोर रहता है
क़सम उस हिज्र की जिसमें अलम का[5] ज़ोर रहता है
क़सम उस इश्क़ की तक़दीस[6] जिसके दर की[7] दर्बां हैं
क़सम उस इश्क़ की पाकीज़गी[8] खुद जिस पे क़ुर्बां है
क़सम उस ऐश की हस्ती अदम है[9] जिसकी दुनिया में
क़सम उस ऐश की तम्हीद ग़म है जिसकी दुनिया में
क़सम उस वस्ल की[10] जो रूह की तस्कीं का[11] सामाँ[12] है
क़सम उस वस्ल की जिसके लिए आलम[13] परीशां है
क़सम उस रूह की जिससे है नाम-ए-इश्क़ ताबिंदा
क़सम उस रूह की जिससे है नाम-ए-आरज़ू ज़िन्दा
क़सम उस हुस्न की जिसमें जमाल-ए-खुदनुमाई[14] है
क़सम उस हुस्न की जिसमें जलाल-ए-किबरियाई[15] है

ग़म-ए-जानाँ का[16] अब दिल से भुलाना मुझको मुश्किल है
बनाकर नक़्श[17] उल्फ़त का मिटाना मुझको मुश्किल है

(१९३६)

◇ ◇ ◇

१. आर्तनाद की २. आंसुओं की ३. जुदाई की ४. आर्तनाद का ५. दुख का ६. पवित्रता ७. दरवाज़े की ८. पवित्रता ९. जो नहीं है १०. मिलन की ११. तृप्ति, शान्ति का १२. साधन १३. संसार १४. अभिमान का सौन्दर्य १५. दैवी तेज १६. प्रेयसी के ग़म को १७. चित्र

क़सम

(२)

क़सम महताब की[1], महताब के सीमीं नज़ारों की
क़सम सहन-ए-गुलिस्तां के तरब-ज़ा सब्ज़ा-ज़ारों की[2]
क़सम उन आबशारों की कि जो मोती उगलते हैं
क़सम उन शाख़सारों की[3] जहां जल्वे मचलते हैं
क़सम सीमीं-अज़ारों की[4] गुलिस्तां की बहारों की
क़सम अशजार की[5], अशजार के रंगीं नज़ारों की
क़सम कलियों, की कलियों के सरूर-अफ़ज़ा[6] चटकने की
क़सम फूलों की, फूलों से गुलिस्तां के महकने की
क़सम हुस्न-ए-जहां-आरा की[7] सेह्र-आगीं[8] अदाओं की
क़सम सेहन-ए-गुलिस्तां की तरब-अफ़ज़ा फ़ज़ाओं की[9]

० ० ०

क़सम अहद-ए-जवानी की[10] जो रूह-ए-ज़िन्दगानी है
क़सम उस इश्क़ की जो हासिल-ए-दुनिया-ए-फ़ानी[11] है
क़सम उस बेक़रारी की क़रार-ए-दिल जिसे कहिये
क़सम उस दाग़-ए-उल्फ़त की बहार-ए-दिल जिसे कहिये
क़सम उस दर्द की जो रात भर सोने नहीं देता
क़सम उस ज़ब्त की जी भरके जो रोने नहीं देता

---

१. चांद की २. आनन्द-वर्धक हरियाली की ३. शाखाओं की ४. चांदी ऐसे गालों की ५. पेड़ों की ६. मस्ती-वर्धक ७. संसार को सुसज्जित करने वाले सौन्दर्य की ८. जादूई ९. आनन्दवर्धक वातावरण की १०. युवावस्था की ११. नश्वर संसार का सार

क़सम उस नक़्श-ए-पा की[1] जिसके हिस्से में है पामाली[2]
क़सम उस खाक की, क़िस्मत में जिसके है ज़बूं-हाली[3]
क़सम उस ख्वाब की फिर से नज़र जो आ नहीं सकता
क़सम उस बात की जिसकी क़सम दिल खा नहीं सकता
क़सम उसकी जो मयख़ाने में रहकर तिश्ना-काम[4] आए
क़सम उस त की याद-ए-मर्ग[5] जो आशिक़ के नाम आए
क़सम उस आग की जो चैन से जीने नहीं देती
क़सम उस ज़ख्म की, दुनिया जिसे सीने नहीं देती
क़सम मज़दूर के इफ़लास की[6], उसरत की[7], ज़िल्लत की
क़सम मेहनत की, बुनियादें हैं जिसपर जाह-ओ-सर्वत की[8]
क़सम किश्ती की जो मिन्नत-कश-ए-साहिल[9] नहीं होती
क़सम उस राह की जिसमें कहीं मंज़िल नहीं होती
क़सम बीमार की जिसका बड़ी मुश्किल से दम निकले
क़सम हसरत की जो उल्फ़त में निकले भी तो कम निकले
क़सम तदबीर की[10] जो शाकी-ए-तक़दीर[11] रहती है
क़सम तक़रीर की जो ज़ब्त की तस्वीर रहती है
क़सम उस देस की जिसमें कोई अपना नहीं मिलता
क़सम उस दिल की जिसका गुञ्चा-ए-मक़सद[12] नहीं खिलता

---

१. पद-चिह्न की २. रौंदे जाना ३. बुरी अवस्था ४. प्यासा ५. मौत के बाद ६. निर्धनता की ७. दरिद्रता की ८. समृद्धि और वैभव की ९. तट की आभारी १०. प्रयत्न की ११. भाग्य-परिवादी १२. उद्देश्य-रूपी कली

क़सम उस नाख़ुदा की[1] साथ जो गिर्दाब में[2] छोड़े
क़सम उस आस की जो नामुरादी बनके दिल तोड़े
क़सम उस रिंद की[3] जिस तक न जाए जाम महफ़िल में
क़सम हसरत की जो हसरत की सूरत ही रहे दिल में
क़सम है उस शनावर[4] की जिसे दरिया निगल जाए
क़सम उस आशियां की[5] जो बहार आते ही जल जाए
क़सम उस आंख की जिसके कभी आंसू नहीं थमते
क़सम उस सब्र की जिसके क़दम दिल में नहीं जमते
क़सम उस सोज़ की जिसमें हज़ारों साज़ पिन्हां[6] हैं
क़सम उस राज़ की जिसमें नियाज़-ओ-नाज़ पिन्हां[7] हैं
क़सम शम्म-ए-जमाल-ए-हुस्न की[8] सोज़-आफ़रीनी की[9]
क़सम सूफ़ी-मनष दरवेश की[10] उज़्लत-नशीनी की[11]
क़सम तस्वीर की जिस पर मिटे बीमार फ़ुर्क़त का[12]
क़सम तस्वीर की जिससे घटे आज़ार फ़ुर्क़त का
क़सम उसकी नहीं मद्द-ए-मुक़ाबिल[13] जिसका दुनिया में
क़सम उसकी जो लासानी[14] है अपने हुस्न-ए-यकता में[15]

मैं तेरी याद से दम भर भी ग़ाफ़िल[16] हो नहीं सकता
तेरा जो हो चुका अब वो मेरा दिल हो नहीं सकता

◇ ◇ ◇

१. मांझी की २. भंवर में ३. मद्यप की ४. तैराक ५. घोंसले की ६. निहित ७. निहित ८. सुन्दरी या प्रेयसी के मुख-रूपी दीपक की ९. तपनोत्पादन की १०. फ़क़ीर की ११. एकांतवास की १२. जुदाई का १३. बराबर का १४. अनुपम १५. सुन्दरता में अद्वितीय १६. बेख़बर

रफ़ीक़ा-ए-हयात के[1] नाम

ज़िन्दगी इक मुस्तक़िल[2] आज़ार[3] है तेरे बग़ैर,
सांस इक चलती हुई तलवार है तेरे बग़ैर।
जिसकी इक मौजे-नफ़स से[4] मरके जी उठती थी तू,
वो मसीहा-दम[5] तेरा बीमार है तेरे बग़ैर।
काटने को दौड़ता है हर सुकून-ए-ज़िन्दगी,
वहशत-अफ़्ज़ा[6] साया-ए-दीवार है तेरे बग़ैर।
तू जो आती है तसव्वुर में[7] तो मर जाता हूं मैं,
किस क़दर मोहलिक[8] तेरा दीदार[9] है तेरे बग़ैर।
हो गईं इक ख़्वाब राह-ए-ज़ीस्त की[10] आसानियां,
अब तो हर मंज़िल मेरी दुश्वार है तेरे बग़ैर।
रौनक़-ए-काशाना[11] गुम है जाऊं काशाने में क्या,
दर[12] जिसे कहता था मैं दीवार है तेरे बग़ैर।
दिल में रखना भी जिसे मेरे लिए मुम्किन नहीं,
बात वो नाक़ाबिल-ए-इज़्हार[13] है तेरे बग़ैर।
ज़िन्दगी गंजीना-ए-ऐश-ओ-तरब[14] थी तेरे साथ,
ज़िन्दगी मजमूआ-ए-अफ़कार[15] है तेरे बग़ैर।

---

१. जीवन-साथी (पत्नी) के २. स्थायी ३. रोग, पीड़ा ४. श्वास की लहर से ५. मसीह की तरह फूंक मारकर (मुर्दों को) जिलाने वाला चिकित्सक ६. भयावह ७. कल्पना में ८. घातक ९. दर्शन १०. जीवन-मार्ग की ११. घर की रौनक़ १२. दरवाज़ा १३. अभिव्यक्त न हो सकने वाली १४. सुखों का भंडार १५. चिंताओं का समूह

तू जो थी हर तल्ख़ी-ए-गुफ़्तार[1] शीरीं[2] थी मुझे,
तल्ख़ हर शीरीनी-ए-गुफ़्तार है तेरे बग़ैर।
बन गया है बाग़ का हर फूल मेरे दिल का दाग़,
शाख़-ए-गुल मेरे लिए तलवार है तेरे बग़ैर।
आरज़ूओं में हरारत[3] है न उम्मीदों में जोश,
सर्द अब हर गर्मी-ए-बाज़ार है तेरे बग़ैर।
तुझसे पैमान-ए-वफ़ा[4] बांधा था तेरे 'अर्श' ने,
अब वो पैमान-ए-वफ़ा भी बार[5] है तेरे बग़ैर।
(१९५८)

◇ ◇ ◇

१. कटु बात २. मधुर ३. गर्मी ४. वफ़ा का वचन ५. बोझ

तेवर तो देख ज़माने के

हर बात में आपा-धापी है चालाकी है तर्रारी[1] है
दुनिया के फ़साने का उन्वां[2] मक्कारी है ऐयारी[3] है
अफ़सोस कि ऐसी दुनिया में तू मस्त-ए-मय-ए-ख़ुद्दारी[4] है
तेवर तो देख ज़माने के !

राहत का[5] यहां अब काम नहीं, ये दौर[6] है रंज-ओ-मुसीबत का
मासूम की गर्दन कटती है, सद-चाक[7] है दामन इस्मत[8] का
है नाज़ शराफ़त पर तुझको ज़िल्लत है मोल शराफ़त का
तेवर तो देख ज़माने के !

ज़हरीले डंक चलाते हैं दुनिया पर ये दुनिया वाले
गोरी क़ौमों की चांदी है माअ़तूब-ए-मुक़द्दर[9] हैं काले
तू क्यों है अमल से[10] बेगाना ऐ कैफ़-ए-ख़ुदी के[11] मतवाले
तेवर तो देख ज़माने के !

---

१. तेज़ी २. शीर्षक ३. धोखेबाज़ी ४. झूठे स्वाभिमान की शराब से मस्त ५. सुख का ६. काल ७. बुरी तरह फटा हुआ ८. सतीत्व ९. भाग्य में धिक्कार लिये हुए १०. कर्मशीलता से ११. अहं-भाव की मादकता के

जो ख़ुद मंज़िल से ग़ाफ़िल[1] हैं ऐसे हैं राहनुमा[2] लाखों
ख़ुद उक़्दा जिनका हल न हुआ ऐसे हैं उक़्दा-कुशा[3] लाखों
लेकिन तू अज्ज़ का[4] बंदा है जिस बंदे के आक़ा लाखों
तेवर तो देख ज़माने के !

हर घर में हवस का डेरा है, हर देस में हिर्स-परस्ती[5] है
अक़वाम के[6] अम्न की ख़ुद दुश्मन अक़वाम की ग़ालिब-दस्ती[7] है
कैफ़ीयत-ए-अम्न के[8] शैदाई तू माइल-ए-कैफ़-ओ-मस्ती[9] है
तेवर तो देख ज़माने के !

ज़रदार के[10] पल्ले में शोहरत मुफ़्लिस का जहां में नाम नहीं
कसरत[11] है ख़ुदाओं की इतनी बंदे का यहां कुछ काम नहीं
मरने की दुआ हर लब पर[12] है जीने का कहीं पैग़ाम नहीं
तेवर तो देख ज़माने के !

अब वजह-ए-फ़साद तिजारत है, अब अम्न की ज़ामिन जंग हुई
नामूस पे[13] मिटने की ख़्वाहिश इस दौर में वजह-ए-नंग[14] हुई
अल्लाह के बंदों पर तौबा अल्ला की ज़मीं भी तंग हुई
तेवर तो देख ज़माने के !

---

१. बेख़बर २. पथप्रदर्शक ३. गुत्थी सुलझाने वाले ४. विनय का ५. लालच की पूजा ६. जातियों के ७. बढ़कर हाथ मारना ८. शान्ति की स्थिति के ९. आनन्द और मस्ती की ओर झुका हुआ १०. पैसे वाले के ११. अधिकता १२. प्रत्येक होंट पर १३. नाम या लज्जा पर १४. लज्जित होने का कारण

अब पंद-ओ-नसाएह[1] सुनते हैं हम तोपों और मशीनों से
होता है इलाज-ए-दर्द जहां तलवारों से संगीनों से
है अब तक लेकिन रब्त[2] तुझे सिज्दों से और जबीनों से[3]
तेवर तो देख ज़माने के !

जड़ काट के रख तक़लीद की[4] तू तेवर भी देख ज़माने के
बुनियाद भी रख तजदीद की[5] तू तेवर भी देख ज़माने के
उम्मीद भी रख ताईद की[6] तू तेवर भी देख ज़माने के
तेवर तो देख ज़माने के !

(१९३९)

० ० ०

१. उपदेश २. सम्बंध ३. माथों से ४. अनुकरण की
५. नवीकरण की ६. समर्थन की

इन्तिबाह*

सुख की गर्दन काट रही है दुनिया की तलवार तो देख,
जिस तलवार को चूम रहा है उस तलवार की धार तो देख।
जान यहां हर चीज़ की क़ीमत आन यहां हर चीज़ का मोल,
सौदा करने वाले ग़ाफ़िल पहले ये बाज़ार तो देख।
छूट चुकीं तहज़ीब की नब्ज़ें तुझको लेकिन होश नहीं,
फ़िक्र-ए-दर्मां से[1] पहले तू रंग-ए-रुख़-ए-बीमार[2] तो देख।
डंक निहायत ज़हरीले हैं मज़हब और सियासत के,
नागों की नगरी के बासी नागों की फुंकार तो देख।
इसकी ज़द में[3] जो भी आया ख़ाक हुआ बर्बाद हुआ,
ये तहज़ीब का फ़ितना और इस फ़ितने की रफ़्तार तो देख।
कितने तैर गये हैं इसको कितने इसमें डूब गये,
खेल नहीं है जीवन-सागर तू इसके उस पार तो देख।
कुंद छुरी है और इससे मज़लूम की[4] गर्दन कटती है,
ऐश की हसरत तौबा-तौबा अंदाज़-ए-आज़ार[5] तो देख।
नाज़ुक कश्ती नाज़ुक चप्पू और इस पर तूफ़ान का ज़ोर,
पार करेगा दरिया को तू? अपनी जान-ए-ज़ार[6] तो देख।
'अर्श' कहां तक आख़िर ये पुरलुत्फ़[7] सुहानी उम्मीदें,
ख़ुशफ़हमी पर फूल न इतना कैसे हैं आसार[8] तो देख।

(१९४३)

० ० ०

---

*चेतावनी

१. इलाज की चिन्ता से २. बीमार के चेहरे का रंग ३. पकड़ में ४. जिसपर ज़ुल्म किया गया हो ५. कष्ट पहुंचाने का ढंग ६. दुर्बल प्राण ७. आनन्दपूर्ण ८. रंग-ढंग

ख़ुदा और इन्सान

ख़ुदा

वादी - ओ - कोह - ओ - दमन[1] मैंने तुझे बख़्शे हैं,
नहर - ओ - दरिया - ओ - चमन मैंने तुझे बख़्शे हैं।
वक़्फ़[2] तेरे लिए आसाइश - ए - दुनिया[3] कर दी,
गुल - ए - मक़सूद से[4] मैंने तेरी झोली भर दी।

इन्सान

तेरी दुनिया को किया है मुतमद्दिन[5] मैंने,
जो न मुमकिन था बनाया उसे मुमकिन मैंने।
मैं वो इन्सां हूं तेरी मरहमत - ए - मोहकम से[6],
नस्ल-ए-इन्सां को[7] मिटा सकता हूं ऐटम बम से।

◇ ◇ ◇

---

१. वादियां, पहाड़, जंगल आदि २. समर्पित ३. संसार के सुख-वैभव ४. उद्देश्य-पूर्ति-रूपी फूल से ५. सुसंस्कृत ६. दृढ़ अनुकम्पा से ७. मानव-जाति को

कम-ज़र्फ़[1] दुनिया

ये दौर-ए-ख़िरद[2] है दौर-ए-जुनूं[3], इस दौर में जीना मुश्किल है,
अंगूर की मय के धोखे में ज़हराब[4] का पीना मुश्किल है।
जब नाख़ुन-ए-वहशत[5] चलते थे रोके से किसीके रुक न सके,
अब चाक-ए-दिल-ए-इन्सानियत[6] सीते हैं तो सीना मुश्किल है।
जो 'धर्म' पे बीती देख चुके, 'ईमां' पे जो गुज़री देख चुके,
इस 'राम-ओ-रहीम' की दुनिया में इन्सान का जीना मुश्किल है।
इक सब्र के घूंट से मिट जाती सब तिश्नालबों की[7] तिश्नालबी,
कमज़र्फ़ी-ए-दुनिया के सदक़े ये घूंट भी पीना मुश्किल है।
वो शे'ला नहीं जो बुझ जाये, आंधी के एक ही झोंके से,
बुझने का सलीक़ा आसां है, जलने का क़रीना[8] मुश्किल है।
करने को रफ़ू कर ही लेंगे दुनिया वाले सब ज़ख़्म अपने,
जो ज़ख़्म दिल-ए-इन्सां पे[9] लगा, उस ज़ख़्म का सीना मुश्किल है।
वो मर्द नहीं जो डर जाये माहौल के[10] ख़ूनीं मन्ज़र[11] से,
उस हाल में जीना लाज़िम[12] है, जिस हाल में जीना मुश्किल है।
मिलने को मिलेगा बिल-आख़िर[13] ऐ 'अर्श' सुकूने-साहिल[14] भी,
तूफ़ान-ए-हवादिस से लेकिन बच जाये सफ़ीना, मुश्किल है।

(१९५०)

◇ ◆ ◇

---

१. ओछी २. बुद्धि का काल ३. उन्माद का काल ४. पानी में घुला हुआ विष ५. पशुता के नाख़ून ६. मानवता के हृदय का घाव ७. प्यासों की ८. सुन्दर ढंग ९. मानव-हृदय पर १०. वातावरण के ११. दृश्य १२. अनिवार्य १३. अन्ततः १४. तट की शान्ति

एशिया को छोड़ दो !

ख़ून चूसा, जान ली, अब जिस्म भी खाते हो तुम
ऐ सियासी करगसो[1] क्यों ज़ुल्म फ़र्माते हो तुम
एशिया के ग़म में क्यों दुबले हुए जाते हो तुम
अब बला से कुछ भी हो, तुमने तो घर को भर लिया,
काम अपना कर लिया
लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो,
एशिया को छोड़ दो

बनके ताजिर[2] हिर्स का[3] दामन बहुत फैला चुके
तेल भी तुम पी चुके और कोयला भी खा चुके
कोयला खा-खा के हम पर आग भी बरसा चुके
अब तो घर की राह लो छोड़ो ये जंग-ए-ज़रगरी[4],
एशिया की रहबरी[5]
लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो,
एशिया को छोड़ दो

बेकसों के ग़म में मरने के लिए तैयार हो
सादगी का रूप भरने में बड़े पुरकार[6] हो
गुमरहों को[7] राह पर लाने के ठेकेदार हो
अहल-ए-मशरिक़[8] के लिए ये जांफ़िशानी[9] किसलिए,
सरगरानी[10] किसलिए
लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो
एशिया को छोड़ दो

---

१. गिद्धो ! २. व्यापारी ३. लोभ का ४. दौलत की जंग
५. नेतृत्व ६. निपुण ७. भटके हुओं को ८. पूरब के निवासियों
९, १०. कष्ट उठाना

तुमने फैलाया हज़ारों साल हमदर्दी का दाम[१]
तुमने सदियों तक मचाया शोर-ए-बहबूद-ए-अनाम[२]
तुमने क़र्नों[३] तक लिये जाहिल ग़ुलामों के सलाम
अब भी तुम उनकी हिफ़ाज़त के लिए मजबूर हो,
किस क़दर माज़ूर[४] हो
लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो,
एशिया को छोड़ दो

रहज़नी के[५] आज तक बाक़ी हैं ये अंदाज़ क्यों
हर घड़ी ताज़ा है अब भी रस्म-ए-हिर्स-ओ-आज़[६] क्यों
कर रहे हो ऐटमी ताक़त पे बेजा नाज़ क्यों
इन गुनाहों पर भी उज़्र-ए-बेगुनाही किसलिए,
ये तबाही किसलिए
लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो,
एशिया को छोड़ दो

कोरिया, जापान, इंडोनेशिया हो या सियाम
फ़ारमूसा, मशरिक़-ए-वस्ती, मलाया, वियतनाम
इनमें अब कोई न मानेगा तुम्हें अपना इमाम[७]
छोड़कर झूटी इमामत[८] काम अपना कीजिये,
इनको जीने दीजिये
लूट पर बुनियाद है जिनकी वो रिश्ते तोड़ दो,
एशिया को छोड़ दो
(१९५०)

◇ ◇ ◇

१. जाल २. मानव-जाति के हित का ३. शताब्दियों ४. विवश
५. डाकूपन के ६. लोभ की रीति ७. नेता ८. नेतृत्व

ग़ज़लें

बेताब नहीं इश्क़ की दुनिया मेरे आगे
रक़्साँ[1] है तेरे हुस्न का जल्वा मेरे आगे

ऐ जोश-ए-तलब[2] तू हो तो परवा नहीं मुझको
सहरा[3] मेरे आगे हो कि दरिया मेरे आगे

मरकर भी गिरफ़्तार-ए-सफ़र[4] है मेरी हस्ती[5]
दुनिया मेरे पीछे है तो उक़्बा[6] मेरे आगे

वो मस्त हूं, लाता है मेरा दस्त-ए-तसव्वुर[7]
साग़र[8] मेरे आगे कभी मीना[9] मेरे आगे

खुद हुस्न का ख़ाका है ये खुद इश्क़ का नक़्शा
है ख्वाब भी ताअ्बीर[10] भी दुनिया मेरे आगे

हंगामा-ए-आलम की[11] हक़ीक़त है यही 'अर्श'
होता है मेरे इश्क़ का चर्चा मेरे आगे

(१९२६)

◇ ◇ ◇

१. नृत्यशील २. इच्छा का वेग ३. मरुस्थल ४. यात्रा में बंधी हुई ५. जीवन ६. परलोक ७. कल्पना-रूपी हाथ ८. शराब का प्याला ९. सुराही १०. स्वप्न-फल ११. संसार-चक्र की

वो गुम-गश्ता[१] मुसाफ़िर हूं कि अपनी आप मंज़िल हूं
मुझे हस्ती से[२] क्या हासिल[३] मैं खुद हस्ती का हासिल[४] हूं
सुना है तेरी रहमत[५] जुर्म-ए-इस्यां से[६] फ़ुज़ूं-तर[७] है
इसी उम्मीद पर या रब गुनहगारों में शामिल हूं
मेरे ज़ब्त-ए-मुहब्बत ने भी रुस्वा कर दिया मुझको
सुकूं[८] खुद मुझसे कहता है कि मैं बेताबी-ए-दिल हूं
लुटाकर दौलत-ए-ईमां को[९] पहुंचा अस्ल-ए-ईमां[१०] तक
ज़माना होशियारी जिससे सीखे मैं वो ग़ाफ़िल[११] हूं
मेरे साज़-ए-शिकस्ता से[१२] यही आवाज़ आती है
मैं इक फूटी हुई क़िस्मत हूं, इक टूटा हुआ दिल हूं
मेरी नैरंगियों को[१३] 'अर्श' तुम समझो तो क्या समझो
कभी दीवाना-ए-दिल[१४] हूं, कभी बेगाना-ए-दिल[१५] हूं

(१९२७)

◇ ◇ ◇

---

१. भटका हुआ २. जीवन से ३. प्राप्ति ४. निष्कर्ष ५. कृपा ६. पाप के अपराध से ७. और अधिक ८. शान्ति ९. धर्म-रूपी धन को १०. वास्तविक धर्म ११. बेख़बर १२. टूटे साज़ से १३. माया को १४. दिल का दीवाना १५. दिल से बेख़बर

हाजत-ए-जाम[1] नहीं, जाम में क्या रक्खा है
दिल को उस आंख का दीवाना बना रक्खा है
क्या तमाशा ये मुहब्बत ने बना रक्खा है
दिल को फ़र्याद के पहलू में बिठा रक्खा है
क्या नये ढब के सितम[2] आपने ईजाद[3] किये
हाथ उठाने से भी अब हाथ उठा रक्खा है[4]
ताबिश-ए-नूर से[5] खीरा[6] हैं निगाहें सबकी
आपके हुस्न ने अंधेर मचा रक्खा है
अब वो मर्क़द पे[7] सर-ए-शाम[8] ही आ जाते हैं
हमने सोकर भी नसीबे को जगा रक्खा है
सुनने देता ही नहीं दिल उन्हें फ़र्याद मेरी
उसने अपना ही अलग शोर मचा रक्खा है
दाद[9] लेकर अभी पलटी नहीं आहें दिल की
'अर्श' पर[10] हमने निगाहों को लगा रक्खा है
(१६२८)

◇ ◇ ◇

१. शराब के प्याले की ज़रूरत २. ज़ुल्म ३. आविष्कार ४. अर्थात हाथ नहीं उठाते ५. प्रकाश की चमक से ६. चुंधियाई हुई ७. क़ब्र पर ८. शाम होते ही ९. न्याय १०. आकाश पर

मेरा दिल ही मेरे दिल का बयां[1] है
मुहब्बत की दो-हर्फ़ी[2] दास्तां है
कोई देखे क़फ़स[3] वालों की हालत
उठा गुलशन की जानिब से[4] धुआं है
सुना करते थे दिल की बेदिली को
ज़बां भी तेरे आगे बेज़बां है
तुझे हर इक जगह देखा है फिर भी
अभी समझा नहीं मैं तू कहां है
ज़रा हिम्मत से ओ गुमकर्दा-मंज़िल[5]
अभी कुछ दूर गर्द-ए-कारवां[6] है
फ़ुग़ां को[7] 'अर्श' तक पहुंचा ही देंगे
हुआ क्या जो दिल अपना नातवां[8] है
(१६२८)

◇ ◇ ◇

---

१. बयान २. बहुत छोटी ३. पिंजरा ४. ओर से ५. मंज़िल से भटके हुए ६. कारवान के गुज़रने से उड़ी हुई धूल ७. आह को ८. कमज़ोर

जो दिल में है वो क्यों न आए ज़बां तक
मुहब्बत के सदमे सहूं मैं कहां तक

जो अरमान दिल में हैं ऐ ज़ब्त-ए-उल्फ़त[1]
फ़ुग़ां[2] बनके आने को हैं अब ज़बां तक

यहां ऐ ग़म-ए-दिल मैं जिस हाल में हूं
उसी हाल में मुझको ले चल वहां तक

फिराया तेरी जुस्तजू ने[3] हमेशा
न पहुंचा मगर मैं तेरे आस्तां[4] तक

निकल कर रहे 'अर्श' आंखों से आंसू
करे कोई ज़ब्त-ए-मुहब्बत कहां तक

(१६२८)

◇ ◇ ◇

---

१. प्रेम को दबाना २. फ़र्याद ३. तलाश ने ४. चौखट

लुत्फ़ इतना तो मुझे इश्क़ में हासिल होता
हुस्न की बज़्म में[१] आईना मेरा दिल होता
ऐ जुनूं[२] ! मैं तेरे ए'जाज़ का[३] क़ायल होता[४]
दिल जो मंज़िल पे भी आवारा-ए-मंज़िल[५] होता
हर नफ़स[६] नाला-ओ-फ़र्याद का[७] हामिल[८] होता
हाल फ़ुर्क़त में[९] जो इज़्हार के[१०] क़ाबिल होता
ऐ मेरे इश्क़ को कामिल[११] न समझने वाले
मैं न होता तो तेरा हुस्न न कामिल होता
काश वो एक तसन्नोअ़[१२] न समझते ग़म को
वो मुझे देखते और उनसे मैं ग़ाफ़िल होता
शम्मअ़ पर शौक़ से परवाने मिटे जाते थे
रश्क[१३] था मुझको कि मैं भी किसी क़ाबिल होता
आरज़ू दिल की कभी डूब न जाती दिल में
मेरी नज़रों में जो इस बह्र का[१४] साहिल होता
तीर-ओ-नश्तर तेरे अशआ़र[१५] भी होते ऐ 'अर्श'
तेरे पहलू में अगर दर्द-भरा दिल होता

(१९२८)

० ० ०

१. महफ़िल में २. उन्माद ! ३. चमत्कार का ४. मान लेता
५. मंज़िल पर पहुंचकर भी भटका हुआ ६. श्वास ७. आर्तनाद का
८. वाहक ९. जुदाई में १०. अभिव्यक्ति के ११. पूर्ण १२. बनावट
१३. ईर्ष्या १४. सागर का १५. शे'र

हसीनों के सितम को मेहरबानी कौन कहता है
अदावत को[1] मुहब्बत की निशानी कौन कहता है
ये है इक वाक़ई तफ़सील[2] मेरी आप-बीती की
बयान-ए-दर्द-ए-दिल को[3] इक कहानी कौन कहता है
यहां हरदम नये जल्वे, यहाँ हरदम नये मन्ज़र[4]
ये दुनिया है नई इसको पुरानी कौन कहता है
तुझे जिसका नशा हर दम लिये फिरता है जन्नत में
बता ऐ शैख़ ! उस कौसर[5] को पानी कौन कहता है
तरीक़ा ये भी है इक इम्तिहान-ए-जज़्बा-ए-दिल का[6]
तुम्हारी बेरुख़ी को बदगुमानी[7] कौन कहता है
बला है, क़हर है, आफ़त है, फ़ित्ना है क़यामत का
हसीनों की जवानी को जवानी कौन कहता है
फ़ना[8] होकर भी हासिल है वही रंग-ए-बक़ा[9] इसका
हमारी हस्ती-ए-फ़ानी को[10] फ़ानी कौन कहता है
हज़ारों रंज इसमें 'अर्श', लाखों कुल्फ़तें[11] इसमें
मुहब्बत को सरूर-ए-ज़िन्दगानी[12] कौन कहता है
(१९२९)

◇ ◇ ◇

---

१. दुश्मनी को २. विवरण ३. दिल के दर्द के बयान को ४. दृश्य ५. जन्नत की एक नदी ६. दिल के जज़्बे की परीक्षा का ७. बुरी धारणा या मिथ्या संदेह ८. मिटना या मर जाना ९. अस्तित्व का रंग १०. नश्वर जीवन को ११. कष्ट १२. जीवन का आनन्द

पा-शिकस्ता[१] क्यों मुझे ऐ शौक़-ए-मंज़िल[२] कर दिया
क्यों मेरी राह-ए-तलब को[३] और मुश्किल कर दिया
मुझ पे ये उल्टा असर क्या तूने ऐ दिल कर दिया
साज़-ए-महफ़िल होके मुझको सोज़-ए-महफ़िल[४] कर दिया
मुझको गिर्दाब-ए-फ़ना में[५] डूबने का ग़म नहीं
मेरी नज़रों से मगर क्यों दूर साहिल कर दिया
शौक़ की[६] रंगीनियों में इक नई शान आ गई
तूने जब ख़ून-ए-तमन्ना[७] उनमें शामिल कर दिया
सैर-ए-गुलशन की ज़रूरत मुझको ऐ हमदम[८] नहीं
अश्क-ए-ख़ूं ने[९] गुलबदामां[१०] दामन-ए-दिल कर दिया
इम्तियाज़ - ए - काबा - ओ - बुतख़ाना[११] अब बेकार है
बेख़ुदी ने[१२] दूर फ़र्क़-ए-हक़-ओ-बातिल[१३] कर दिया
कुछ नज़र आए थे साथी ऐ ग़ुबार - ए - कारवां[१४]
तूने आकर बीच में क्या पर्दा हाइल कर दिया
लज़्ज़त-ए-एहसास-ए-उल्फ़त से[१५] भी अब महरूम[१६] हूं
दिल के खो जाने ने मुझको 'अर्श' बेदिल कर दिया

(१६२६)

° ° °

---

१. टूटे हुए पैरों वाला २. ऐ मंज़िल के शौक़ ! ३. प्रेम या याचना-मार्ग को ४. महफ़िल में जलने वाला ५. नाश के भंवर में ६. प्रेम की ७. चाह का लहू ८. साथी ! ९. ख़ून के आंसुओं ने १०. पुष्प-वर्ण ११. मन्दिर और मस्जिद का भेद १२. आत्म-विसर्जन ने १३. सच और झूठ का भेद १४. कारवान की धूल १५. प्रेम-भाव की अनुभूति के आनन्द से १६. वंचित

उमीद-ओ-बीम के[1] आलम में[2] दिल इतना परीशां है
कभी जीने की हसरत है कभी मरने का अर्मां है
मज़म्मत[3] दर्द-ए-उल्फ़त की[4] न कर ऐ हमनशीं[5] इतनी
यही वो चीज़ है जिससे बिना-ए-बज़्म-ए-इम्कां[6] है
खत-ए-तक़दीर में[7] रद्द-ओ-बदल मुमकिन नहीं हर्गिज़
यहाँ तदबीर आजिज़[8], फ़ल्सफ़ा गुम, अक़्ल हैरां है
जफ़ा के वास्ते मेरी ही जान - ए - नातवां[9] चुन ली
ये उनकी खास बख़्शिश है, ये उनका ख़ास एहसां है
ख़ुदा का नाम लेकर 'अर्श' पीजा और गुम होजा
क़दह-नोशों के[10] मशरब में[11] इसी का नाम ईमाँ है
(१९३२)

◇ ◇ ◇

ख़ुश्क बातों में कहां ऐ शैख़ कैफ़-ए-ज़िन्दगी[12]
वो तो पीकर ही मिलेगा जो मज़ा पीने में है

◇ ◇ ◇

---

१. आशा-निराशा के २. हालत में ३. बुराई ४. प्रेम की पीड़ा की ५. साथी ६. संभावनाओं की सभा की नींव ७. भाग्य-रेखा में ८. प्रयत्न विवश है ९. निर्बल प्राण १०. पीने वालों के ११. पीने की जगह अथवा पीने का ढंग १२. जीवन का आनन्द

ख़ुद मैं इक दामन-ए-सद-चाक[१] हूं ऐ वहशत-ए-दिल[२]
क्या हुआ चाक[३] जो कोई मेरे दामन में नहीं
गेसु - ए - हूर[४] मुबारक हो तुझी को ऐ शैख़
शुक्र करता हूं ये फंदा मेरी गर्दन में नहीं
हां इधर आ, तू किधर जाती है ऐ बर्क़-ए-फ़ना[५]
मैं क़फ़स में[६] हूं कोई मेरे निशेमन में[७] नहीं
यूं तो मौजूद हैं उम्मीद की कलियां लाखों
गुल - ए - मक़सूद[८] मगर एक भी दामन में नहीं
(१९२९)

◇ ◇ ◇

तौबा - तौबा ये बलाख़ेज़ जवानी तौबा
देखकर उस बुत-ए-काफ़िर को ख़ुदा याद आया
बस्ती जाती है फिर उम्मीद की दुनिया दिल में
कोई भूला हुआ वादा उन्हें फिर याद आया
इस क़दर पास रहा ज़ब्त-ए-मुहब्बत का मुझे
उनका शिक्वा न ज़बां पर दम-ए-फ़र्याद[९] आया
(१९३१)

◇ ◇ ◇

---

१. सैंकड़ों टुकड़ों (छिद्रों) वाला २. मन की घबराहट ३. फटाव
४. हूरों के केश ५. नाश की बिजली ६. पिंजरे में ७. घोंसले में
८. उद्देश्य-पूर्ति-रूपी फूल ९. फ़र्याद के समय

तू अगर दिल में एक बार आये
उम्र भर के लिए क़रार आए
आशियाना ही गुलिस्तां में नहीं
अब ख़िज़ां आए या बहार आए
वो न आयें तो ऐ दम-ए-आख़िर[1]
लब पे नाम उनका बार-बार आए
न हरम में[2] हैं वो न दैर में[3] हैं
हम तो दोनों जगह पुकार आए
उसको तेरा पयाम-बर[4] समझूं
मौत अगर वक़्त-ए-इन्तिज़ार आए
यास[5] कहती है कुछ, तमन्ना कुछ
किसकी बातों का ए'तबार आए
मौत ने आसरा दिया भी तो कब
जब मुसीबत के दिन गुज़ार आए

(१९३२)

◇ ◇ ◇

---

१. अंतिम समय २, ३. मन्दिर और मस्जिद में ४. संदेश ले जाने वाला ५. निराशा

क्या चारा करें, क्या सब्र करें, जब चैन हमें दिन-रात नहीं
ये अपने बस का रोग नहीं, ये अपने बस की बात नहीं

जो उसने किया अच्छा ही किया, जो हमपे हुआ अच्छा ही हुआ
अब गिरया-ए-ग़म[1] कुछ चीज़ नहीं, अब नाला-ए-ग़म[2] कुछ
बात नहीं

हम सब्र-ओ-रज़ा के[3] बंदे हैं, जो तुमने किया सब झेल लिया
अब दिल में भी अफ़सोस नहीं अब लब पे[4] भी हैहात[5] नहीं

जब उल्फ़त का दम भर बैठे जब चाल ही उल्टी चल बैठे
नादान हो फिर क्यों कहते हो इस चाल में बाज़ी मात नहीं

कुछ रंज नहीं, कुछ फ़िक्र नहीं, दुनिया से अलग हो बैठे हैं
दिल चैन से है, आराम से है, आलाम[6] नहीं, आफ़ात[7] नहीं

तुम लुत्फ़ को[8] जौर[9] बताते हो, तुम नाहक़[10] शोर मचाते हो
तुम झूठी बात बनाते हो, ऐ 'अर्श' ये अच्छी बात नहीं
(१९३३)

० ० ०

१, २. ग़म का आर्त्तनाद ३. धैर्य धरने और स्वीकार करने के
४. होंटों पर ५. आह ६, ७. दुख, मुसीबतें ८. कृपा को ९. जुल्म
१०. व्यर्थ

यास में[1] नालों का[2] शोर - ए - हा-ओ - हू[3] जाता रहा
आरज़ू के साथ जोश - ए - आरज़ू जाता रहा

मिल गया आखिर निशान-ए-मंज़िल-ए-मक़सद[4] मगर
अब ये रोना है कि ज़ौक़ - ए - जुस्तजू[5] जाता रहा

चश्म - ए - मयगूं के[6] तसव्वुर ने[7] पिलाई इस क़दर
इश्तियाक़ - ए - बादा - ओ - जाम - ओ - सुबू[8] जाता रहा

क्या कहूं ऐ 'अर्श' उनकी तल्ख बातों का असर
मुख्तसर ये है कि ज़ौक़ - ए - गुफ़्तगू[9] जाता रहा

(१९३४)

० ० ०

रंज से दिल की रिहाई उम्र-भर होती नहीं
ये कहानी मरते दम तक मुख्तसर होती नहीं

वो करम[10] उस वक़्त करते हैं हमारे हाल पर
जब हमारे हाल की हमको खबर होती नहीं

(१९३४)

० ० ०

---

१. निराशा में २. आर्त्तनाद का ३. हाए-हाए का शोर ४. सही मंज़िल का पता ५. तलाश की अभिरुचि या आनन्द ६. शराबी आंख के ७. खयाल ने ८. शराब तथा प्याले और मटकी का शौक़ ९. बातचीत की अभिरुचि १०. कृपा

माइल-ए-ज़ब्त भी[1] आमादा-ए-फ़र्याद भी[2] है
दिल गिरफ़्तार-ए-मुहब्बत भी है आज़ाद भी है

दास्तान-ए-दिल-ए-मायूस[3] न पूछ ऐ हमदम[4]
ये वो बस्ती है जो आबाद भी बर्बाद भी है

ऐ मेरे ज़ब्त को कामिल[5] न समझने वाले
क़ाबिल-ए-दाद[6] मेरी कोशिश-ए-फ़र्याद[7] भी है

उड़के जाऊं भी तो क्या और न जाऊं भी तो क्या
मुन्तज़िर बर्क़[8] भी है, ताक में सैयाद[9] भी है

क्या लिखूं, क्या न लिखूं सुर्ख़ी-ए-अफ़साना-ए-दिल[10]
ग़म भी है, दर्द भी, हसरत भी है, फ़र्याद भी है

मेरी तस्कीन तो कर, भूलके इतना तो बता
याद रखने का जो वादा था तुझे याद भी है

इक़ रविश[11] दिल की हो ऐ 'अर्श' तो कुछ बात भी हो
क्या मुसीबत है कि ये शाद[12] भी नाशाद[13] भी है

(१९३५)

० ० ०

---

१. सहनशीलता की ओर प्रवृत्त २. फ़र्याद के लिए तैयार भी ३. निराश मन की कथा ४. साथी ५. पूर्ण ६. प्रशंसनीय ७. फ़र्याद की कोशिश ८. बिजली ९. शिकारी १०. मन की कहानी का शीर्षक ११. ढंग १२, १३. प्रसन्न भी, अप्रसन्न भी

मुश्किल ये कहानी है, उक़्दे[1] हैं ये अफ़साने
असरार[2] मुहब्बत के आख़िर कोई क्या जाने
ये इश्क़-ए-गुल-ओ-बुलबुल[3], ये श्मअ़, ये परवाने
सब हैं मेरी उल्फ़त के बिखरे हुए अफ़साने
साक़ी तेरे मस्ताने हर्गिज़ नहीं दीवाने
बहकी हुई बातें हैं बीते हुए अफ़साने
मौहूम[4] उमीदों से रौनक़ है हर-इक दिल में
आबाद इन्हीं से हैं उजड़े हुए काशाने[5]
तदबीर बनाएगी हर गाम पे[6] मैख़ाना
होते हैं तो हों खाली तक़दीर के पैमाने
आग़ाज़[7] जो अच्छा है, अंजाम[8] बुरा क्यों हो
नादां है जो कहता है अंजाम ख़ुदा जाने
ऐ 'अर्श' सुनाऊं क्या गुज़री जो मुहब्बत में
पुरसोज़[9] हैं ये बातें पुरग़म हैं ये अफ़साने

(१९३६)

◇ ◇ ◇

---

१. गुत्थियां २. भेद ३. फूल और बुलबुल का प्रेम ४. भ्रममूलक
५. घर ६. क़दम पर ७. आरम्भ ८. अन्त ९. तपन भरे

ख़ुद-फ़रामोशी के[१] आलम में[२] भी इतना होश है
उस तग़ाफ़ुल-आशना को[३] याद कर लेता हूं मैं
ऐ सितम-परवर[४] मेरे इस हौसले की दाद दे
सामने तेरे अगर फ़र्याद कर लेता हूं मैं
हाल को रोता हूं मुस्तक़बिल को[५] रोने के लिए
जब कभी गुज़रे हुए दिन याद कर लेता हूं मैं
आरज़ूओं की, उमीदों की तुझी से है बहार
एक गुल से[६] सौ चमन आबाद कर लेता हूं मैं
दिल की बर्बादी है गो राहत-निशां[७] मेरे लिए
फिर तेरी ख़ातिर इसे आबाद कर लेता हूं मैं
अपना अफ़साना सुनाता हूं किसी के नाम से
इस तरह दिलचस्प ये रूदाद[८] कर लेता हूं मैं
(१९३९)

◇ ◇ ◇

---

१. आत्म-विस्मृति के २. हालत में ३. भूल जाने वाले को ४. अत्याचार करने वाले ५. भविष्य को ६. फूल से ७. आनन्द-दायक ८. कहानी

समझा तो ये समझा मैंने जाना तो ये जाना है
हर वीराना इक बस्ती है हर बस्ती वीराना है

रहबर[1] या तो रहज़न[2] निकले या हैं अपने आप में गुम
क़ाफ़िले वाले किससे पूछें किस मंज़िल तक जाना है

किसका क़ुर्ब[3], कहां की दूरी, अपने आप से ग़ाफ़िल हो[4]
राज़ अगर पाने का पूछे, खो जाना ही पाना है

जीना जंग है तूफ़ानों की मौत है मीठी नींद फ़क़त[5]
जीने से जब डर नहीं तुझको मौत से क्या घबराना है

बेदारी को[6] ख्वाब न कह तू ख्वाब को भी बेदारी जान
किसने कहा तुझसे ये दुनिया इक झूटा अफ़साना है

जलना हो या जल जाना कुछ फ़र्क़ नहीं इन दोनों में
परवाना भी शम्मअ़ है ग़ाफ़िल, शम्मअ़ भी इक परवाना है

इश्क़ सरासर एक हक़ीक़त[7] इश्क़ सरासर लाफ़ानी[8]
हुस्न पे क्यों इतराते हो तुम हुस्न तो इक अफ़साना है

मेरी अर्ज़-ए-तमन्ना पर[9] अहबाब से[10] वो ये कहते हैं
'अर्श' की बातें क्या सुनते हो 'अर्श' तो इक दीवाना है

(१९३६)

◆ ◆ ◆

---

१. पथ-प्रदर्शक २. लुटेरे ३. सामीप्य ४. अपने आपको भूल जा ५. केवल ६. जागरण को ७. वास्तविकता ८. अमर ९. इच्छा के निवेदन पर १०. मित्रों से

यूं भी फ़रेब-ए-ज़ौक़-ए-तलब[१] खा रहा हूं मैं
तेरा निशान पा के मिटा जा रहा हूं मैं
सदगूना[२] रश्क[३] है मुझे अपने नसीब पर
दुनिया को खो रहा हूं तुझे पा रहा हूं मैं
जो वसवसे[४] थे दिल में वो अब हो रहे हैं दूर
शायद तेरे क़रीब हुआ जा रहा हूं मैं
दुनिया को रश्क है मेरी फ़िक्र-ए-बुलंद पर[५]
मुझको ख़बर नहीं कि उड़ा जा रहा हूं मैं
लेता हूं अपना नाम, कभी नाम ग़ैर का
यूं बात - बात में उन्हें उलझा रहा हूं मैं
आएगा कब यक़ीन तुम्हें मेरी बात का
मानो भी अब तुम्हारी क़सम खा रहा हूं मैं
हैरत-फ़ज़ा[६] है मेरे मसाइब की[७] दास्तां
दिल को तेरे ख़याल से बहला रहा हूं मैं
हर मन्ज़र-ए-बुलंद[८] भी अब पस्त[९] हो चुका
ऐ 'अर्श' किस फ़ज़ा में[१०] उड़ा जा रहा हूं मैं

(१९३७)

◇ ◇ ◇

---

१. प्राप्ति की अभिरुचि का धोखा २. सैंकड़ों गुना ३. ईर्ष्या ४. शंकाएं ५. ऊंचे चिंतन पर ६. आश्चर्यजनक ७. दुखों की ८. ऊंचा दृश्य ९. नीचा १०. वातावरण में

उनको याद आए तो शायद वो करें याद मुझे
इतना मायूस न कर ऐ दिल-ए-नाशाद[1] मुझे
अब तो ये हाल है मिल बैठ के रो लेते हैं
दिल-ए-बर्बाद को मैं और दिल-ए-बर्बाद मुझे
अभी कुछ हसरत-ए-परवाज़[2] है मेरे दिल में
बाल-ओ-पर काट के छोड़ ऐ मेरे सय्याद मुझे
आह वो बात कि जिस बात पे दिल दे बैठा
याद करने पे भी आती नहीं अब याद मुझे
न निशेमन[3] है न है शाख़-ए-निशेमन[4] बाक़ी
लुत्फ़ जब है कि करे अब कोई बर्बाद मुझे
मैं सुनाता हूं ग़म-ए-दिल का फ़साना दिल को
दिल सुनाता है मेरे इश्क़ की रूदाद[5] मुझे
दिल-ए-आगाह को[6] ग़फ़लत[7] भी अता[8] की होती
इक मुसीबत है मुहब्बत में तेरी याद मुझे
दूर है मंज़िल-ए-मक़सूद[9] तो परवा नहीं 'अर्श'
ले ही जाएगी वहां तक मेरी फ़र्याद मुझे

(१९३७)

◆ ◇ ◇

---

१. दुखी मन २. उड़ने की अभिलाषा ३. घोंसला ४. वह शाखा जिस पर घोंसला था ५. वृत्तान्त ६. जागरूक मन को ७. बेख़बरी ८. प्रदान ९. वांछित मंज़िल

ख़मोशी ने सुनाया हाल-ए-मजबूरी फ़ुग़ां[1] होकर
मेरी आंखों ने दिल की तर्जुमानी की[2] ज़बां होकर

अभी तो आरज़ू-ए-मुज़तरिब का[3] अहद-ए-तिफ़्ली[4] है
ख़ुदा जाने ये क्या-क्या हश्र ढाएगी[5] जवाँ होकर

ज़रा कम हो चली हैं गर्मियां शौक़-ए-मुहब्बत की
ख़फ़ा हो जाओ फिर इक बार हमसे बदगुमां होकर

मेरी अर्ज़-ए-तमन्ना में भी आख़िर कुछ तो जादू है
नहीं भी अब निकलती है तुम्हारे मुंह से हां होकर

मुहब्बत में यही सबसे बड़ी नामेहरबानी है
ग़ज़ब है आपका मिलता किसीसे मेहरबां होकर

मेरी वामांदगी में[6] कुछ तो थे आसार[7] हिम्मत के
रहा मैं कारवां के साथ गर्द-ए-कारवां होकर

तमीज़-ए-कुफ़्रो-ईमां[8] मिट चुकी है 'अर्श' अब दिल से
सदा नाक़ूस की[9] कानों में आती है अज़ाँ[10] होकर

(१९३७)

◇ ◇ ◇

---

१. आर्त्तनाद २. भाषांतर ३. व्याकुल कामना का ४. बाल्य-काल
५. प्रलय मचायेगी ६. शिथिलता में ७. चिह्न ८. धर्म-अधर्म का भेद
९. शंख की १०. अज़ान

मोहब्बत में क्या-क्या जफ़ाकारियां[1] हैं
वफ़ादारियां भी गुनहगारियां हैं
मेरे शौक़-ए-उल्फ़त का[2] इनआ़म देखो
वफ़ाओं के बदले जफ़ाकारियां हैं
हर इक दिल मुरक़्क़ा[3] है मजबूरियों का
कुछ ऐसी मोहब्बत की मुख़्तारियां[4] हैं
मोहब्बत में मरना नहीं कोई मुश्किल
वो जीने में हैं जितनी दुशवारियां हैं
निराली हैं कैफ़ीयतें[5] अपने दिल की
न बेहोशियां हैं न हुशियारियां हैं
करामत[6] है ये या तलव्वुन[7] है उनका
तग़ाफ़ुल[8] में पिन्हां[9] खबरदारियां हैं
लगाई है क्या आग दिल में किसी ने
हर इक सांस के साथ चिंगारियां हैं
(१९३७)

◇ ◇ ◇

---

१. अत्याचार २. प्रेम की रुचि का ३. संग्रह ४. अधिकार
५. हालतें ६. चमत्कार ७. चपलता ८. लापरवाही ९. निहित

सनमख़ाने में[1] भी शान-ए-ख़ुदा मालूम होती है
नज़र मेरी हक़ीक़त-आशना[2] मालूम होती है

गुमां[3] होता है जिस पर नग़मा-ए-जांसोज़ का[4] सबको
मेरे टूटे हुए दिल की सदा[5] मालूम होती है

तसन्नोअ़ की[6] फ़ुसूं-कारी[7] का कुछ ऐसा असर देखा
कि ये दुनिया मुझे दुनिया-नुमा[8] मालूम होती है

बिछड़कर क़ाफ़िले से बदहवास इतना हुआ हूं मैं
कि हर आवाज़ अब बांग-ए-दरा[9] मालूम होती है

जिसे तू इन्तिहाए-दर्द-ए-दिल[10] कहता है ऐ नादां
वही शौक़-ए-वफ़ा की इब्तिदा[11] मालूम होती है

दुआ़ के वास्ते अब 'अर्श' हाथ उठते नहीं अपने
तबीयत महव-ए-तस्लीम-ओ-रज़ा[12] मालूम होती है

(१९३७)

◇ ◇ ◇

१. मन्दिर में २. वास्तविकता की जानकार ३. भ्रम ४. जान को जला देने वाले गीत का ५. आवाज़ ६. बनावट की ७. जादू ८. दुनिया ऐसी ९. घंटे की आवाज़ १०. दिल के दर्द की चरम सीमा ११. आरम्भ १२. उपासना में मग्न

ज़ख़्म-ए-दिल भी दिखा के देख लय
बस तुम्हें आज़मा के देख लिया
दाग़-ए-दिल से भी रोशनी न मिली
ये दिया भी जला के देख लिया
शिक्वे मिटते हैं क्योंकर आपसे आप
सामने उनके जाके देख लिया
लुत्फ़ जो बेख़ुदी में[1] था वो कहां
होश में आ के हमने देख लिया
न गई उनकी तम्कनत[2] न गई
बारहा सर झुका के देख लिया
जो न देखा था आज तक हमने
दिल की बातों में आ के देख लिया
ज़िन्दगी हर तरह वबाल[3] रही
सब्र भी आज़मा के देख लिया
कोई अपना नहीं यहां ऐ 'अर्श'
सबको अपना बना के देख लिया

(१९३८)

◇ ◇ ◇

---

१. आत्मविस्मृति में २. अभिमान ३. मुसीबत

उसकी जफ़ा[१] जफ़ा नहीं, उसको न तू जफ़ा समझ
हुस्न - ए - जहां - फ़रेब को[२] ये भी कोई अदा समझ

दाग़-ए-फ़िराक़-ए-इश्क़ को[३] आतिश-ए-सोज़-ए-दिल[४] न कह
ये भी किसी के हुस्न का जल्वा - ए - पुरज़िया[५] समझ

दिल में वो तेरे है मकीं[६] दिल से तेरे अलग नहीं
तुझ से जुदा वो लाख हो तू न उसे जुदा समझ

तुझको गुनाह - ए - इश्क़ पर लाख कोई बुरा कहे
तेरा भला इसीमें है तू न उसे बुरा समझ

तू जो कहे तो दिल भी दूं, जान भी दूं, जिगर भी दूं
गो[७] मैं गदा-ए-इश्क़[८] हूं मुझको न बेनवा[९] समझ

ज़ख़्म-ए-जिगर जो मुंदमिल[१०] ग़म में नहीं हुआ न हो
दर्द की इन्तिहा को[११] तू शौक़ की[१२] इब्तिदा[१३] समझ

मंज़िल-ए-राह-ए-इश्क़ की उसको कोई ख़बर नहीं
राह दिखाए जो तुझे उसको न रहनुमा[१४] समझ

(१९३८)

◇ ◇ ◇

---

१. निर्दयता २. संसार को धोखे में डाल देने वाले सौंदर्य की
३. (इश्क़ की) जुदाई के दाग़ को ४. दिल की तपन की आग
५. प्रकाशपूर्ण जल्वा ६. बसा हुआ ७. यद्यपि ८. प्रेम का भिखारी
९. कंगाल १०. भरा हुआ घाव ११. चरम सीमा को १२. प्रेम की
१३. शुरूआत १४. पथ-प्रदर्शक

अब वो करते हैं मेरी ग़म - ख़्वारियां[1]
हो गईं आसान सब दुशवारियां
अर्ज़ - ए - वाजिब से[2] भी रक्खा बेनियाज़[3]
मुझ को ले डूबीं मेरी ख़ुद्दारियां[4]
उनसे मिलता है क़नाअ़त का[5] सबक़
एक ने'मत[6] हैं मेरी नादारियां[7]
कोशिश-ए-इज़्हार-ए-ग़म[8] भी ज़ब्त[9] भी
आह ये मजबूरियां - मुख़्तारियां
'अर्श' क्यों हंसता है तू झूटी हंसी
किस से सीखी हैं ये दुनियादारियां
(१९३८)

◇ ◇ ◇

उनका करम[10] हुआ तो गईं ग़म की इश्रतें[11]
ऐ दोस्त अब वो लज़्ज़त-ए-आह-ए-सहर[12] कहाँ
रहबर[13] तो क्या निशाँ किसी रहज़न का भी नहीं
गुमगश्तगी गई मुझे छोड़ कर कहां
दुनिया में और उसका ठिकाना कहीं नहीं
जाए ग़म - ए - फ़िराक़ मुझे छोड़ कर कहां

◇ ◇ ◇

---

१. सहानुभूतियां २. उचित निवेदन ३. उदासीन ४. आत्म-सम्मान ५. निःस्पृहता का ६. ईश्वरीय देन ७. हीनताएं ८. ग़म प्रकट करने का प्रयत्न ९. सहनशीलता १०. कृपा ११. आनन्द १२. सुबह के समय की आहों का आनन्द १३. पथ-प्रदर्शक

दिल में हर वक़्त यास[1] रहती है
अब तबीयत उदास रहती है
उनसे मिलने की गो नहीं सूरत
उनसे मिलने की आस रहती है
मौत से कुछ नहीं ख़तर[2] मुझको
वो तो हर वक़्त पास रहती है
आब-ए-हैवां[3] जिसे बुझा न सके
ज़िन्दगी को वो प्यास रहती है
दिल तो जल्वों से बदहवास ही था
आंख भी बदहवास रहती है
उनकी सूरत अ़जब है शो'बदा-बाज़[4]
दूर रह कर भी पास रहती है
दिल कहां 'अर्श' अब तो पहलू में
एक तस्वीर-ए-यास रहती है

(१९३९)

० ० ०

१. निराशा २. खतरा ३. आबे-हयात, अमृत ४. चमत्कारी

तकमील - ए - जुनूं[१] करके जो ख़ाक - ब - सर[२] आया
फ़र्ज़ानों से[३] अफ़ज़ल[४] वो दीवाना नज़र आया

अब इससे सिवा होगी महरूमी - ए - क़िस्मत[५] क्या
नाला[६] तेरे दर से[७] भी महरूम - ए - असर[८] आया

देता हूं दिलासे यूं हंगाम - ए - सफ़र[९] दिल को
वो मंज़िल - ए - यार आई, वो दोस्त का घर आया

अहबाब ने[१०] की आकर फ़ौरन मेरी दिलजोई
मैं दौर - ए - मुसीबत से[११] जिस वक़्त गुज़र आया

मेरा तो नहीं, अपना पैग़ाम दिया होगा
क़ुर्बां मेरे क़ासिद के कुछ काम तो कर आया

शायद मेरे रोने से दिल टूट गया उनका
कुछ रहम न तुझको भी ऐ दीदा - ए - तर[१२] आया

ऐ 'अर्श' असर ग़म का दिल से न गया हर्गिज़
दाग़ मिटा जितना उतना ही उभर आया

(१९३९)

० ० ०

---

१. उन्माद की पूर्ति २. सिर पर धूल लिये ३. बुद्धिजीवियों से ४. अच्छा ५. दुर्भाग्य ६. आर्त्तनाद ७. दरवाजे से ८. बेअसर ९. यात्रा के समय १०. मित्रों ने ११. मुसीबत के दिनों में से १२. अश्रुपूर्ण आँख

दर्द की इब्तिदा[1] भी है ज़ब्त की[2] इन्तिहा[3] भी है
क़तरा-ए-अश्क[4] आंख में आके रुका हुआ भी है

राह-ए-वफ़ा में[5] हर जगह खा न फ़रेब-ए-ज़िन्दगी[6]
देख कि उस मुक़ाम पर[7] सिज्दा-ए-दिल रवा[8] भी है

ऐ दिल-ए-कमनज़र ज़रा उस पे भी कुछ नज़र रहे
दुश्मन-ए-मुद्दआ[9] है जो ख़ालिक़-ए-मुद्दआ[10] भी है

उनके हिजाब का[11] गिला[12] तेरी ज़बां पे है अबस[13]
तेरी निगाह-ए-शौक़ का[14] पर्दा कभी उठा भी है

ऐ ग़म-ए-इब्तिदा सलाम इसमें नहीं कोई कलाम
मेरी निगाह-ए-दूरबीं[15] वाक़िफ़-ए-इन्तिहा[16] भी है

यूं तो बक़ौल-ए-ख़ुद[17] है तू 'अर्श' से भी बुलंदतर
कहते हैं लोग क्या तुझे, तूने कभी सुना भी है

(१९३९)

◊ ◊ ◊

---

१. शुरुआत २. सहनशीलता की ३. चरम सीमा ४. आंसू की बूंद ५. प्रेम-मार्ग में ६. जीवन का धोखा ७. स्थान पर ८. उचित ९. कामना का शत्रु १०. कामना का स्रष्टा ११. लज्जा का १२. शिकायत १३. व्यर्थ १४. प्रेम-दृष्टि का १५. दूरदर्शी नज़र १६. परिणाम से परिचित १७. अपने कथनानुसार

सुकूं-बख़्श-ए-तबीयत[1] दुआयें बेअसर होकर
हमारे ऐब भी चमके ज़माने में हुनर होकर
कमाल-ए-हिम्मत-ए-दिल पर[2] जुनूं में[3] रश्क[4] है मुझको
ख़िरद की[5] मंज़िलें तै कर गया आशुफ़्ता-सर[6] होकर
हवा का एक झोंका तुझ को जब चाहे बुझा डाले
ये क्या जीना है दुनिया में चिराग़-ए-रहगुज़र[7] होकर
शिआर-ए-शम्मअ[8] है ख़ामोश रहना और जल जाना
उसे मालूम है हासिल[9] नहीं कुछ नौहागर[10] होकर
पर-ए-परवाज़[11] दुश्मन थे निशेमन-ज़ाद-ताइर के[12]
बढ़ा शौक़-ए-गिरफ़्तारी तलिस्म-ए-बाल-ओ-पर[13] होकर
बढ़ी है सरगरानी[14] और भी ज़ब्त-ए-मुहब्बत से
हुई कुछ और लम्बी ये कहानी मुख़्तसर[15] होकर
मजाल-ए-गुफ़्तगू[16] पाऊं मैं शायद इस बहाने से
चला हूं उनके दर तक आप अपना नामाबर होकर
तलाश-ए-मंज़िल-ए-जानां में जब ऐ 'अर्श' मैं निकला
चली गुमगश्तगी भी साथ मेरे हम-सफ़र होकर

(१९४०)

○ ○ ○

---

१. तबियत को शान्त करने वाली २. दिल के साहस के कमाल पर ३. उन्माद में ४. ईर्ष्या ५. बुद्धि की ६. हत्-बुद्धि ७. मार्ग का दीपक ८. दीपक का आचरण ९. प्राप्त १०. आर्त्तनादकर्ता ११. उड़ने वाले पंख १२. घोंसला-निवासी पक्षी के १३. बालों और पंखों का जादू १४. रोष १५. संक्षिप्त १६. बात करने का साहस

तस्वीर - ए - दोस्त दिल में कुछ ऐसे उतर गई
झोली मेरी मुराद के फूलों से भर गई
है बेनियाज़ - ए - शिकवा - ए - तक़दीर[1] ग़म मेरा
जिस ढंग से गुज़र गई, अच्छी गुज़र गई
उठने पे भी न उठ सकी उनकी निक़ाब-ए-रुख़[2]
उल्टा मेरी निगाह पे इल्ज़ाम धर गई
सौ - सौ सज़ाएं इश्क़ में इक - इक गुनाह पर
कुछ तो बता मुझे तेरी रहमत[3] किधर गई
आज़ार - ए - ज़ीस्त[4] हिज्र में[5] हद से गुज़र गया
क्या जाने मेरी मौत कहां जाके मर गई
सैयाद ने[6] इजाज़त - ए - परवाज़[7] दी तो क्या
क़ुव्वत[8] ही बाल-ओ-पर की जो परवाज़ कर गई[9]
दौलत नहीं नसीब तो उसका गिला ही क्या
नादारियों के फ़ैज़ से[10] नीयत तो भर गई
उनके बिगाड़ में है मुहब्बत का शाएबा[11]
ऐ 'अर्श' तू समझ मेरी बिगड़ी संवर गई

(१९४०)

◊ ◊ ◊

---

१. भाग्य की शिकायत के प्रति उदासीन २. चेहरे की निक़ाब ३. अनुकम्पा ४. जीवन का कष्ट ५. जुदाई में ६. शिकारी ने ७. उड़ने की आज्ञा ८. शक्ति ९. उड़ गई (समाप्त हो गई) १०. कृपा से ११. अंश, झलक

इश्क़ को महव-ए-नाज़[1] होने दे
हुस्न से बेनियाज़ होने दे
रख न दर्मां से[2] आसरा कोई
दर्द को चारा-साज़[3] होने दे
आह में आ ही जाएगी तासीर[4]
आह को दिल-गुदाज़[5] होने दे
तर्क-ए-उल्फ़त का[6] आ गया इल्ज़ाम
अब तो अफ़शाए-राज़[7] होने दे
है तुझी पर सितम तो फिर उनको
ख़ूगर-ए-इम्तियाज़[8] होने दे
छुप नहीं सकते तुझसे वो ऐ 'अर्श'
दीदा-ए-दिल[9] तो बाज़[10] होने दे
(१९४०)

० ०

१. नाज़ उठाने में लीन २. उपचार से ३. उपचारक ४. गुण, प्रभाव ५. हृदय-विदारक ६. प्रेम को तज देने का ७. भेद खुलने दे ८. अंतर समझने का अभ्यस्त ९. हृदय की (आंतरिक) आंख १०. खुलने दे

जिगर को, दिल को लेकर साथ मेरे अश्क-ए-तर[1] निकले
मेरी जान-ए-हज़ीं[2] भी काश बनकर हम-सफ़र[3] निकले
मिसाल - ए - बर्क़[4] ही निकले वो पर्दा छोड़ कर अपना
अगर निकले तो क्योंकर हसरत-ए-ज़ौक़-ए-नज़र[5] निकले
निक़ाब - ए - रुख़[6] उलटने को तो उसने बारहा[7] उलटी
बुरा हो अपनी हैरत का[8] कि हम खुद कम-नज़र निकले
असीरी से[9] नहीं कुछ कम रिहाई हम असीरों की
क़फ़स की[10] क़ैद से निकले भी तो बे-बाल-ओ-पर निकले
असर उस बेवफ़ा पर हो गया ज़ब्त - ए - मुहब्बत का
मेरे रोके हुए आंसू ही आख़िर कारगर[11] निकले
अभी करता हूं इक हिचकी से चारा[12] दर्द-ए-पिन्हां का[13]
ये क्यों मायूस होकर मेरे घर से चारागर[14] निकले
उमीदें बाइस - ए - आज़ार - ए - जां[15] जिनको समझती थीं
वही नाले वुफ़ूर - ए - यास में फ़रहत - असर निकले
कहें ऐ 'अर्श' क्या बेगानगी शौक़ - ए - मुहब्बत की
हम उनसे बेख़बर निकले, वो हमसे बेख़बर निकले

(१९४०)

◇ ◇ ◇

---

१. आंसू २. दुखी आत्मा ३. सहचर ४. बिजली की तरह ५. देखने की हसरत ६. चेहरे की निक़ाब ७. कई बार ८. आश्चर्य का ९. कैद से १०. पिंजरे की ११. प्रभावकारी १२. इलाज १३. भीतरी पीड़ा का १४. उपचारक १५. जीवन को कष्ट पहुंचाने का कारण

ये कौन आया रहज़न की[1] तरह जो दिल की बस्ती लूट गया
आराम का दामन चाक हुआ[2], तस्कीन का[3] रिश्ता टूट गया

करता है फ़राहम[4] क्यों नादां टुकड़े दिल के आईने के
अब जोड़ के इसको क्या लेगा जो टूट गया सो टूट गया

हम जिसको दिखाकर दुनिया से कुछ दाद-ए-मोहब्बत[5] पा लेते
अफ़सोस कि ग़म की चोटों से वो दिल का छाला फूट गया

दामन में लिये फिरती थी जिसे मुहतात ख़िरद की[6] नादानी
इन मस्लहतों की दौलत को इश्क़ एक नज़र में लूट गया

बेचारगी-ए-दिल के[7] सदक़े, एहसास-ए-ग़म-ए-उल्फ़त[8] भी नहीं
ये एक सहारा था अपना अब ये भी सहारा छूट गया

ऐ राहनुमा तू बैठ यहीं हम खुद मंज़िल को जा लेंगे
दो-चार क़दम चलकर ही तेरा दम टूट गया जी छूट गया

ऐ 'अर्श' वुफ़ूर-ए-गिरया में[9] ये हुस्न-ए-तसव्वुर[10] लाहासिल[11]
जल्वों को पिरोते थे जिसमें वो तार-ए-नज़र[12] ही टूट गया

(१९४१)

◇ ◇ ◇

---

१. लुटेरे की २. फट गया ३. धैर्य का ४. एकत्र ५. प्रेम निभाने की प्रशंसा ६. सावधान बुद्धि की ७. दिल की विवशता के ८. प्रेम (न रहने) के ग़म का अनुभव ९. आर्त्तनाद के आधिक्य में १०. कल्पना की सुन्दरता ११. व्यर्थ १२. नज़र का तार

वो हाज़िर हो कि ग़ायब हो, निहां[1] यूं भी है और यूं भी
सरासर राज़[2], राज़-ए-कुन्-फ़कां[3] यूं भी है और यूं भी
तहय्युर[4] है हुज़ूरी में तो बेताबी है दूरी में
मुसीबत में ये जान-ए-नातवां[5] यूं भी है और यूं भी
तमन्ना की तरह तर्क-ए-तमन्ना[6] भी मुसीबत है
ये दुनिया इक मुक़ाम-ए-इम्तिहां[7] यूं भी है और यूं भी
वो आकर भी रुलाते हैं, वो जाकर भी रुलाते हैं
दिल-ए-नाकाम[8] मशग़ूल-ए-फ़ुग़ां[9] यूं भी है और यूं भी
जो दिल में दाग़ रौशन हैं तो अश्क-ए-खूं[10] हैं आंखों में
ये मन्जर[11] गुलिस्तां-दर-गुलिस्तां[12] यूं भी है और यूं भी
फ़क़त[13] कहने को है ये कामयाबी और नाकामी
मुहब्बत फ़ातह-ए-कौन-ओ-मकां[14] यूं भी है और यूं भी
सितम[15] हो या करम[16] दोनों का हम पर शुक्र वाजिब है
जो अपना मेहरबां है मेहरबां यूं भी है और यूं भी
घटा सावन की और ऐ 'अर्श' इल्हामात की बारिश
ज़मीं पर आज फ़ैज़-ए-आस्मां यूं भी है और यूं भी

(१९४१)

◇ ◇ ◇

१. अदृष्ट २. रहस्य ३. संसार का रहस्य ४. आश्चर्य ५. दुर्बल जान ६. इच्छा का परित्याग ७. परीक्षा-स्थान ८. असफल दिल ९. आर्त्तनाद में व्यस्त १०. लहू के आंसू ११. दृश्य १२. उपवनों में उपवन १३. केवल १४. ब्रह्माण्ड की विजेता १५. अत्याचार १६. कृपा

ज़ाहिदों की[1] हस्ती भी क्या अ़जीब हस्ती है
जौक़-ए-इत्तिक़ा[2] भी है रूह[3] भी तरसती है
मैगुसारी-ओ-तौबा[4] इक फ़रेब हैं दोनों
अस्ल में मुक़ाम-ए-दिल[5] होश है न मस्ती है
कुछ क़ुसूर साक़ी का कुछ है अब्र-ओ-बारां का[6]
क़ाबिल-ए-सज़ा नाहक़[7] जुर्म-ए-मै-परस्ती[8] है
मेरे दिल की नैरंगी[9] पूछते हो क्या मुझसे
तुम नहीं तो वीराना, तुम रहो तो बस्ती है
सब्र के खज़ानों को रोज़ मैं लुटाता हूं
सिज्दा-गाह-ए-अहल-ए-दिल[10] मेरी तंगदस्ती[11] है
'अर्श' अपने दामन पर दाग़ ये न आने दे
दुश्मन-ए-सुकून-ए-दिल[12] तेरी ज़रपरस्ती[13] है
(१९४१)

० ० ०

१. विरक्तों की २. संयम की रुचि ३. आत्मा ४. मदिरा-पान और तौबा ५. दिल का स्थान ६. बादलों और हवा का ७. व्यर्थ ८. मदिरापान का अपराध ९. विचित्रता १०. दिल वालों के सिर झुकाने का स्थान ११. निर्धनता १२. दिल की शान्ति की शत्रु १३. धन की पूजा

बिगड़ी हुई क़िस्मत को बदलते नहीं देखा
आजाए जो सर पर उसे टलते नहीं देखा
क्यों लोग हवा बांधते हैं हिम्मत-ए-दिल की
हमने तो इसे गिर के संभलते नहीं देखा
हम जौर[1] भी सह लेंगे मगर डर है तो ये है
ज़ालिम को कभी फूलते-फलते नहीं देखा
अहबाब की[2] ये शान-ए-हरीफ़ाना[3] सलामत[4]
दुश्मन को भी यूं ज़हर उगलते नहीं देखा
अश्कों में[5] सुलगती हुई उम्मीद को देखो
पानी से अगर घर कोई जलते नहीं देखा
वो राह सुझाते हैं हमें हज़रत-ए-रहबर[6]
जिस राह पे उनको कभी चलते नहीं देखा
उल्फ़त में अगर जान निकल जाए तो सच है
दिल से मगर अरमान निकलते नहीं देखा
ऐ 'अर्श' गुनह भी हैं तेरे दाद के[7] क़ाबिल
तुझको कफ़-ए-अफ़सोस भी मलते[8] नहीं देखा
(१९४२)

◇ ◇ ◇

---

१. अत्याचार २. मित्रों की ३. प्रतिद्वंद्वी जैसी शान
४. बनी रहे ५. आंसुओं में ६. पथ-प्रदर्शक महोदय ७. प्रशंसा के
८. अफ़सोस से हाथ मलते

हूर पर शैख़ मस्त है शायद
कुछ तवह्हुम-परस्त[1] है शायद
दिल का मंज़िल पे जाके रुक जाना
ए'तराफ़ - ए - शिकस्त[2] है शायद
सिज्दा - ए - कुफ़्र से नहीं डरता
दिल हक़ीक़त - परस्त[3] है शायद
मिल ही जाता दुआ को बाब-ए-क़ुबूल[4]
हिम्मत-ए-दिल ही पस्त[5] है शायद
मयकदे पर ये किसने दस्तक दी
ज़ाहिद - ए - हक़परस्त है शायद
है क़नाअ़त[6] जो एक जल्वे पर
शौक़ अभी तंगदस्त है शायद
'अर्श' सुनता नहीं किसी की बात
हाल में अपने मस्त है शायद
(१९४२)

० ० ०

---

१. भ्रम-पूजक २. हार मानना ३. वास्तविकता-प्रिय ४. स्वीकृत होने का दरवाज़ा ५. कम ६. निःस्पृहता, काफ़ी मानना

बयां हों भी तो हों आख़िर कहां जो दिल की बातें हैं
न तनहाई की बातें हैं न ये महफ़िल की बातें हैं

मुरत्तब[१] कर लिया यूं हमने अफ़साना मोहब्बत का
कुछ उनके दिल की बातें हैं कुछ अपने दिल की बातें हैं

जो इनमें फंस गया फिर राह पर वो आ नहीं सकता
बड़े चक्कर की बातें रहबर-ए-मंज़िल की[२] बातें हैं

तुम्हारा वअ़ज़[३] राज़-ए-इश्क़[४] क्या खोलेगा ऐ वाइज़[५]
ज़बां की ये नहीं हज़रत ये चश्म-ओ-दिल की बातें हैं

वो महफ़िल से जुदा भी हो चुके महफ़िल को गर्मा कर
मगर महफ़िल में अब तक गर्मी-ए-महफ़िल की बातें हैं

ज़बां से कुछ कहो साहब मगर मालूम है हमको
तुम्हारे दिल की सब बातें हमारे दिल की बातें हैं

मुझे दर्स-ए-सुकूं[६] देते हैं वो जोश-ए-तमन्ना में
इधर तूफ़ान की ख्वाहिश उधर साहिल की बातें हैं

मैं अपने हाल-ओ-माज़ी[७] पर भी कुछ ऐ 'अर्श' रो लेता
मगर पेश-ए-नज़र[८] इस वक़्त मुस्तक़बिल[९] की बातें हैं

(१९४३)

० ० ०

---

१. सम्पादन २. मंज़िल तक ले जाने वाले पथ-प्रदर्शक की ३. उपदेश ४. इश्क़ का रहस्य ५. धर्मोपदेशक ६. शान्त होने का पाठ या उपदेश ७. वर्तमान और अतीत ८. नज़र के सामने, सम्मुख ९. भविष्य

दर्द का हाल आह से पूछो
दिल की बातें निगाह से पूछो
अज़मत-ए-रहमत-ए-ख़ुदावंदी[1]
आरज़ू-ए-गुनाह से[2] पूछो
उनकी पैहम नवाज़िशों का[3] असर
मेरे हाल-ए-तबाह से पूछो
वक़्त राहत का[4] कोई है कि नहीं
रंज-ए-शाम-ओ-पगाह से[5] पूछो
क्यों है दुनिया नज़र में तीरा-ओ-तार[6]
मेरे बख़्त-ए-सियाह से[7] पूछो
माजरा एहतियात-ए-उल्फ़त का[8]
पुरसिश-ए-हर-निगाह से[9] पूछो
अक़्ल क्यों है पनाह की तालिब
वहशत-ए-बेपनाह से पूछो
पस्ती-ए-हर-बुलंदी-ए-दुनिया
मुन्तहा-ए-निगाह से पूछो
अर्श पर क्यों दिमाग़-ए-'अर्श' उड़ा
मुफ़्त की वाह-वाह से पूछो
(१९४३)

० ० ०

---

१. खुदा की कृपा की महानता २. पाप की इच्छा से ३. निरंतर कृपाओं का ४. सुख का ५. सुबह व शाम के दुःखों से ६. अँधेरी ७. काले भाग्य ८. प्रेम में (लोगों की नज़रों से बचने की) सावधानी का ९. हर हाल पूछने वाली आंख

जिस ग़म से दिल को राहत[1] हो, उस ग़म का मुदावा[2] क्या मानी
जब फ़ितरत तूफ़ानी ठहरी, साहिल की तमन्ना क्या मानी
इश्रत में[3] रंज की आमेज़िश[4], राहत में अलम की[5] आलाइश[6]
जब दुनिया ऐसी दुनिया है फिर दुनिया-दुनिया क्या मानी
ख़ुद शैख़-ओ-बिरहन मुजरिम हैं इक जाम से दोनों पी न सके
साक़ी की बुख़्ल-पसन्दी[7] पर साक़ी का शिकवा क्या मानी
जल्वों का तो ये दस्तूर नहीं पर्दों से कभी बाहर आयें
ऐ दीदा-ए-बेतौफ़ीक़[8] तेरा ये ज़ौक़-ए-तमाशा[9] क्या मानी
इख़्लास-ओ-वफ़ा के[10] सिज्दों की जिस दर पर[11] दाद नहीं मिलती
ऐ ग़ैरते-दिल[12] ऐ अज़्मे-ख़ुदी[13] उस दर पर सिज्दा क्या मानी
ऐ साहिबे-नक़्दो-नजर[14] माना इन्सां का निज़ाम[15] नहीं अच्छा
उसकी इस्लाह के पर्दे में अल्लाह से झगड़ा क्या मानी
मैख़ाने में तो ऐ वाइज़ तल्क़ीन के कुछ असलूब बदल
अल्लाह का बंदा बनने को जन्नत का सहारा क्या मानी
इज़्हार-ए-वफ़ा लाज़िम ही सही ऐ 'अर्श' मगर फ़र्यादें क्यों
वो बात जो सब पर ज़ाहिर है उस बात का चर्चा क्या मानी

(१९४३)

◇ ◇ ◇

---

१. आनन्द २. उपचार ३. सुख में ४. मिलावट ५. दुःख की ६. मिलावट ७. कंजूसी ८. असमर्थ आंख ९. तमाशा देखने की रुचि १०. शुद्धहृदयता और प्रेम में पूर्ण रहने के ११. दरवाज़े पर १२. दिल की शर्म १३. आत्म-सम्मान (रखने के) संकल्प १४. पारखी महोदय १५. व्यवस्था

दिल होता है तस्कीन[1] के आलम में[2] हज़ीं[3] और
ले चल मुझे ऐ शौक़ - ए - सुबक - गाम[4] कहीं और
हां और उठा पर्दे को ऐ पर्दानशीं और
मुझ-सा नहीं कोई तेरे जल्वों का अमीं[5] और
जितनी वो मेरे हाल पे करते हैं जफ़ायें
आता है मुझे उनकी मुहब्बत का यक़ीं और
मैख़ाने की है शान इसी शोर - ए - तलब से
हर "और नहीं" पर है तक़ाज़ा कि "नहीं और"
है हासिल-ए-सदज़ीस्त[6] जवानी का ये आलम
ऐ उम्र - ए - गुरेज़ां[7] मुझे रहने दे यहीं और
तकरार का ऐ शैख़ यही तो है नतीजा
तुमने जो कहीं और तो हमसे भी सुनीं और
हम - मर्तबा - ए - 'अर्श'[8] कोई उनमें न होगा
होंगे दर - ए - जानाँ के[9] बहुत ख़ाक-नशीं[10] और
(१९४३)

◇ ◇ ◇

---

१. शांति २. हालत में ३. दुखी ४. मंद गति से चलने वाले शौक़ (इश्क़) ५. विश्वस्त ६. सैकड़ों जीवनों की प्राप्ति या निष्कर्ष ७. सरकती (समाप्त होती) हुई आयु ८. 'अर्श' का-सा ऊंचा स्थान रखने वाला ९. प्रेयसी के दरवाज़े के १०. धूल में रहने वाले

हैं ऐसे बदहवास हुजूम-ए-बला से[1] हम
अपना समझ के मिलते हैं नाआशना से[2] हम

तूफ़ान से उलझ गये लेकर ख़ुदा का नाम
आख़िर निजात[3] पा ही गए नाख़ुदा से[4] हम

पहला-सा वो जुनून-ए-मुहब्बत[5] नहीं रहा
कुछ-कुछ संभल गए हैं तुम्हारी दुआ से हम

यूं मुत्मइन-से[6] आए हैं खाकर जिगर पे चोट
जैसे वहां गए थे इसी मुद्दआ से[7] हम

आने दो इल्तिफ़ात में[8] कुछ और भी कमी
मानूस[9] हो रहे हैं तुम्हारी जफ़ा से हम

ख़ू-ए-वफ़ा[10] मिली दिल-ए-दर्द-आशना[11] मिला
क्या रह गया है और जो मांगें ख़ुदा से हम

आदत सी हो गई है शिकायात की हमें
बेज़ार तो नहीं हैं तुम्हारी जफ़ा से हम

पाए-तलब[12] भी तेज़ था मंज़िल भी थी क़रीब
लेकिन निजात पा न सके रहनुमा से[13] हम

---

१. अत्याचारों के आधिक्य से २. अपरिचित से ३. मुक्ति ४. मांझी से ५. प्रेमोन्माद ६. सन्तुष्ट-से ७. मनोरथ से ८. प्रेम, कृपा में ९. अभ्यस्त १०. प्रेम निभाने की आदत ११. पीड़ाओं से परिचित हृदय १२. तलाश करने वाले पांव १३. पथ-प्रदर्शक से

दुनिया से कुछ लगाव न उक़्बा की[1] आरज़ू
तंग आ गए हैं इस दिल-ए-बेमुद्दआ से[2] हम
होते निशात-ए-इश्क़ से[3] भी फ़ैज़याब[4] 'अर्श'
मजबूर हैं मगर दिल-ए-ग़म-आशना से हम
(१९४४)

◇ ◇ ◇

इश्क़ को तेरी ख़ुशी समझा था मैं
रंज-ओ-ग़म को भी यही समझा था मैं
इक फ़रेब-ए-आरज़ू[5] साबित हुआ
जिसको ज़ौक़-ए-बन्दगी[6] समझा था मैं
मौत से बदतर[7] नज़र आई मुझे
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी समझा था मैं
ए'तबार - ए - दोस्ती बेअस्ल[8] है
अस्ल में कुछ और ही समझा था मैं
वो मोहब्बत इक मुसीबत बन गई
जिसको अब तक दिल्लगी समझा था मैं
इल्तिफ़ात[9], ऐ 'अर्श' उसी का नाम था
जिसको उनकी बेरुख़ी[10] समझा था मैं
(१९४३)

◇ ◇ ◇

---

१. परलोक की २. निरुद्देश्य मन से ३. इश्क़ के आनन्दों से
४. लाभान्वित ५. आकांक्षा का धोखा ६. उपासना की अभिरुचि
७. अधिक ख़राब ८. अवास्तविक ९. कृपा १०. उपेक्षा-भाव

अपनी नज़र में आपको रुसवा[१] किया तो क्या
रो-रोके दर्द-ए-दिल का मुदावा[२] किया तो क्या
अपनी निगाह-ए-शोख से[3] छुपिये तो जानिये
महफ़िल में हम से आपने पर्दा किया तो क्या
चुप हो रहा जहां[४] मुझे दीवाना जान कर
हंगामा कोई शौक़ ने बर्पा किया तो क्या
सोचा तो उसमें लाग शिकायत की थी ज़रूर
.दर पर[५] किसी के शुक्र का सिज्दा किया तो क्या
अपने ही ज़ब्त-ए-खाम[६] की तशहीर[७] हो गई
हमने किसी के ज़ुल्म का चर्चा किया तो क्या
अश्कों से और हो गया मुब्हम[८] बयान-ए-इश्क़
यूं फ़ाश[९] हमने राज़-ए-तमन्ना किया तो क्या
जिस टीस में मज़ा था हमें वो भी अब नहीं
ज़ख्म-ए-जिगर को आपने अच्छा किया तो क्या
दुनिया में ज़िक्र-ए-दोज़ख़-ओ-जन्नत फ़ज़ूल है
उक़्बा को[१०] बात-बात में रुसवा किया तो क्या
तर्क-ए-उमीद[११] ही से मिलेगा सुकून-ए-दिल[१२]
दो दिन की ज़िन्दगी पे भरोसा किया तो क्या

---

१. बदनाम २. इलाज ३. चंचल नजरों से ४. जहान (संसार) ५. दरवाज़े पर ६. अपक्व सहनशीलता ७. विज्ञापन ८. अस्पष्ट ९. प्रकट १०. परलोक को ११. आशा के त्याग १२. मन की शान्ति

ऐ शैख़ पी रहा है तो ख़ुश होके पी इसे
इक नागवार शै को गवारा किया तो क्या
अब तो ये दर्द-ए-इश्क़ मेरी ज़िन्दगी है 'अर्श'
अब उसने दर्द-ए-इश्क़ का चारा[1] किया तो क्या
(१९४४)

◇ ◇ ◇

---

१. इलाज

एहसास - ए - हुस्न बनके नज़र में समा गए
गो लाख दूर थे वो मगर पास आ गए
इक रोशनी - सी दिल में थी वो भी नहीं रही
वो क्या गये चिराग़ - ए - तमन्ना बुझा गए
दैर-ओ-हरम से[1] और तो हासिल न कुछ हुआ
सिज्दे ग़ुरूर - ए - इश्क़ की क़ीमत घटा गए
तनहा - रवी में[2] यूं तो मुसीबत था हर क़दम
हम अहल - ए - कारवां से[3] तो पीछा छुड़ा गए
कितना फ़रेबकार[4] है एहसास - ए - बन्दगी[5]
हम मंज़िल - ए - ख़ुदी से[6] बहुत दूर आ गए
उल्फ़त में फ़िक्र-ए-ज़ीस्त[7] नदामत की[8] बात थी
अच्छे रहे जो जान की बाज़ी लगा गए
जो हाल उनका था वो हमीं जानते हैं 'अर्श'
यूं वो हमारी बात हँसी में उड़ा गए
(१९४५)

◇ ◇ ◇

---

१. मन्दिर, मस्जिद से २. अकेले चलने में ३. कारवान वालों से
४. धोखा देने वाला ५. उपासना का अनुभव ६. अहं की मंजिल से
७. जीवन की चिन्ता ८. लज्जा की

इश्क़ - ए - बुताँ का[1] लेके सहारा कभी - कभी
अपने ख़ुदा को हमने पुकारा कभी - कभी
इस इन्तिहाए - तर्क - ए - मोहब्बत के[2] बावुजूद
हमने लिया है नाम तुम्हारा कभी - कभी
तूफ़ां का ख़ौफ़ है अभी शायद करिश्मा - कार[3]
आता है सामने जो किनारा कभी - कभी
बहके तो मैकदे में[4] नमाज़ों पे आ गए
यूं आक़बत को[5] हमने संवारा कभी - कभी
तनहा-रवी ने[6] रक्खी हमारे जुनूं की[7] लाज
गो अहल - ए - कारवां ने[8] पुकारा कभी - कभी
गो इश्रत-ए-अलम में[9] मुआविन[10] थी उनकी याद
हमने लिया मगर ये सहारा कभी - कभी
अब क्या कहें दिल-ए-मुतलव्विन-मिज़ाज को[11]
अक्सर ये आपका है, हमारा कभी - कभी
दिल ग़र्क़-ए-ऐश होके हुआ लाख मुत्मइन[12]
तूफ़ान - ए - ग़म ने फिर भी उभारा कभी - कभी
पैहम[13] सितम से इश्क़ की तस्कीन[14] हो न जाए
ऐ दोस्त इल्तिफ़ात ख़ुदारा कभी - कभी

---

१. सुन्दरियों के इश्क़ का २. प्रेम को बिल्कुल तज देने के ३. चमत्कार दिखाने वाला ४. मधुशाला में ५. परलोक को ६. अकेले चलने ने ७. उन्माद की ८. कारवान वालों ने ९. दुख के आनन्द में १०. सहयोगी ११. हर घड़ी नया रूप बदलने वाले दिल को १२. सन्तुष्ट १३. निरंतर १४. सन्तुष्टि

ज़ाहिद[1] भी चूम लेता है पीर-ए-मुग़ां का[2] हाथ
पाकर तेरे करम का[3] इशारा कभी - कभी
फ़र्याद - ए - ग़म से 'अर्श' संभलता है दिल मगर
लेते हैं अहल - ए - दिल[4] ये सहारा कभी - कभी
(१९४५)

◇ ◇ ◇

---

१. विरक्त २. शराब पिलाने वाले बूढ़े का ३. कृपा का
४. दिल वाले

इक अश्क-ए-नदामत[1], सुनते हैं, सौ दाग़-ए-कुदूरत[2] धोता है
लेकिन है यहां तो ये आलम[3], ये जी को और डुबोता है
तूफ़ान-ए-बला का[4] खौफ़ नहीं, ये शान-ए-तग़ाफ़ुल[5] क्या कहना
ऐ अहल-ए-वतन[6], तुम हँसते हो और एक ज़माना रोता है
गो फ़स्ल-ए-ख़िज़ां[7] है फिर भी तो कुछ फूल चमन में बाक़ी हैं
ऐ नंग-ए-चमन[8] तू इस पर भी कांटों के हार पिरोता है
अंजामे-अमल की[9] फ़िक्र न कर, है ज़िक्र भी उसका नंगे-अमल
जो करना है तुझको करले वो होने दे जो होता है
तूफ़ान-ए-मुसीबत तेज़ सही, लेकिन ये परीशानी कैसी
कश्ती को बीच समन्दर में क्यों अपने-आप डुबोता है
हम ज़ब्त की[10] मंज़िल के राही फ़र्याद का दामन छोड़ चुके
ये अश्क-ए-सर-ए-मिज़गां[11] लेकिन क्यों राह में कांटे बोता है
इसकी न सुनूं तो भी है सितम, उसकी न सुनूं तो भी है ग़ज़ब
जान अपना रोना रोती है, दिल अपना रोना रोता है
ऐ 'अर्श' तलाश-ए-मंज़िल में अंजाम-ए-दिल की फ़िक्र न कर
गुम होना शान-ए-दिल ठहरी होने दे अगर गुम होता है
(१९४५)

◇ ◇ ◇

---

१. लज्जा का आंसू २. रंजिश या मनोमालिन्य के धब्बे ३. हालत ४. विपत्तियों की बाढ़ का ५. बेरुखी की शान ६. देश-वासियो ७. पतझड़ की ऋतु ८. बाग़ या देश के लिए लज्जा का पात्र ९. कर्म-शीलता के परिणाम की १०. सहनशीलता की ११. पलकों पर आए हुए आंसू

जवाब-ए-तल्ख़ में[1] शामिल मलामत[2] और हो जाती
जहां सब कुछ हुआ इतनी इनायत और हो जाती
नहीं गो फ़र्क़ कुछ घर और मैख़ाने में ऐ वाइज़[3]
वहां पीते तो साक़ी की ज़ियारत[4] और हो जाती
दिखाते हो जहां सौ-सौ तरह से दूर के जल्वे
उसी सूरत कोई मिलने की सूरत और हो जाती
पिलाए यूं तो मैख़ाने से तूने जाम भर-भर कर
इन आंखों से भी साक़ी कुछ इनायत और हो जाती
वो आए भी मगर छेड़ी न अपनी दास्तां हमने
क़यामत में बपा वर्ना क़यामत और हो जाती
ख़ताएं[5] मान लीं सब मैंने ये अच्छा किया वर्ना
पशेमानी से बचने की नदामत और हो जाती
(१९४६)

◇ ◇ ◇

---

१. कटु उत्तर में २. लानत-मलामत ३. धर्मोपदेशक ४. दर्शन
५. अपराध

मोहब्बत सोज़[1] भी है साज़ भी है
खमोशी भी है ये आवाज़ भी है
निशेमन[2] के लिए बेताब ताइर[3]
वहां पाबंदी-ए-परवाज़[4] भी है
मेरी खामोशी-ए-दिल पर न जाओ
कि इसमें रूह की आवाज़ भी है
खमोशी पर भरोसा करने वाले
खमोशी दर्द की ग़म्माज़[5] भी है
दिल-ए-बेगाना-खू[6] दुनिया में तेरा
कोई हमदम, कोई हमराज़[7] भी है
कभी मोहताज[8] लय का भी नहीं ये
कभी नग़मा रहीन-ए-साज़[9] भी है
तराना-हा-ए-साज़-ए-ज़िन्दगी में[10]
इक आवाज़-ए-शिकस्त-ए-साज़[11] भी है

(१९४९)

◇ ◇ ◇

---

१. तपन २. घोंसले ३. पक्षी ४. उड़ने पर पाबंदी ५. प्रतीक ६. एकाकीपन का अभ्यस्त मन ७. भेदी ८. ज़रूरतमंद ९. साज़ का ज़रूरतमंद १०. जीवन-रूपी साज़ के गीतों में ११. साज़ के टूटने की आवाज़

इक फ़क़त[1] मज़लूम का[2] नाला[3] रसा होता नहीं[4]
ऐ ख़ुदा दुनिया में तेरी वर्ना क्या होता नहीं
आशिक़ी में जौहर-ए-फ़ितरत[5] फ़ना होता नहीं
रंग गुल से[6], नग़्मा बुलबुल से जुदा होता नहीं
क्यों मेरे ज़ौक़-ए-तसव्वुर[7] पर तुम्हें शक हो गया
तुम ही तुम होते हो कोई दूसरा होता नहीं
हम को राह-ए-ज़िन्दगी में[8] इस क़दर रहज़न[9] मिले
रहनुमा पर भी गुमान-ए-रहनुमा[10] होता नहीं
सिज्दे करते भी हैं इन्सां ख़ुद दर-ए-इन्सां पे[11] रोज़
और फिर कहते भी हैं बन्दा ख़ुदा होता नहीं
नाख़ुदा को[12] ढूंड जाकर हल्क़ा-ए-गिर्दाब में[13]
बन्दा - ए - साहिल - नशीं[14] तो नाख़ुदा होता नहीं
तर्क-ए-उल्फ़त भी मुसीबत है अब इसका क्या इलाज
वो जुदा होकर भी तो दिल से जुदा होता नहीं
'अर्श' पहले ये शिकायत थी ख़फ़ा होता है वो
अब ये शिक्वा है कि वो ज़ालिम ख़फ़ा होता नहीं
(१९५१)

◇ ◇ ◇

---

१. केवल २. पीड़ित का ३. आर्त्तनाद, फ़र्याद ४. भगवान तक नहीं पहुंचता ५. प्रकृति की विशेषता ६. फूल से ७. कल्पना की अभिरुचि ८. जीवन-मार्ग में ९. लुटेरे १०. पथ-प्रदर्शक का अनुमान ११. मनुष्य के दरवाज़े पर १२. नाविक को १३. भंवर के घेरे में १४. तटवासी

वो वफ़ा-ओ-मेह्र की[1] दास्तां, तुझे याद हो कि न याद हो
कभी तू भी था मेरा मेह्रबां, तुझे याद हो कि न याद हो

तेरे लुत्फ़-ए-ख़ास ने[2] जो दिया तेरी याद ने जो अ़ता किया[3]
ग़म-ए-मुस्तक़िल[4], ग़म-ए-जाविदां[5], तुझे याद हो कि न याद हो

जो तेरे लिए मेरे दिल में था, जो मेरे लिए तेरे दिल में था
मुझे याद है वो ग़म-ए-निहां[6], तुझे याद हो कि न याद हो

तेरी दोस्ती पे मेरा यक़ीं मुझे याद है मेरे हमनशीं[7]
मेरी दोस्ती पे तेरा गुमां[8], तुझे याद हो कि न याद हो

मेरे दिल के जज़्बा-ए-गर्म में[9] मेरे दिल के गोशा-ए-नर्म में[10]
था तेरा मुक़ाम[11] कहां-कहां, तुझे याद हो कि न याद हो

इसे मानता हूं मैं मेह्रबां हैं तेरे रफ़ीक़[12] बहुत यहां
कभी मैं भी था तेरा राज़दां[13], तुझे याद हो कि न याद हो

ये जो 'अर्श' शिक्वा-तराज़ है[14] जिसे हर्ज़ा-गोई पे[15] नाज़ है
ये वही है शायर-ए-ख़ुश-बयां[16], तुझे याद हो कि न याद हो

(१९५१)

◇ ◇ ◇

---

१. लगाव और कृपा की २. विशेष लगाव ने ३. प्रदान किया ४, ५. स्थायी ग़म ६. निहित ग़म ७. साथी ८. संदेह ९. गर्म भाव में १०. कोमल भाग में ११. स्थान १२. साथी १३. भेदी १४. शिकायतें कर रहा है १५. बकवाद पर १६. मधुभाषी शायर

जिस तमन्ना पर शबाब[1] आया उसे मौत आ गई
ज़िन्दगी भी ज़िन्दगी के नाम से शर्मा गई
पहले आज़ुर्दा[2] बनाया दिल को फिर बहला गई
हम पे क्या-क्या नाज़ उनकी आरज़ू फ़र्मा गई
ख़्वाहिश-ए-मा'अ़दूम[3] अच्छी ख़्वाहिश-ए-नाकाम से[4]
हैफ़[5] उस पर फूल बनकर जो कली मुर्झा गई
आह इब्रतनाक[6] था कितना बयान - ए - आशिक़ी[7]
ज़िन्दगी की दास्तां से ज़िन्दगी घबरा गई
बे-उमीद-ओ-बीम[8] राज़ - ए - ज़िन्दगी[9] पाता न मैं
इक यही उलझन थी जो उक़दे[10] मेरे सुलझा गई
कौन होगा अब हदफ़[11] नाकामी - ए - तदबीर का[12]
ज़िन्दगी की राह में तक़दीर तो काम आ गई
अब अयां[13] होते फिरो तुम, अब तुम्हें देखेगा कौन
दीद की[14] हसरत में चश्म-ए-मुन्तज़िर[15] पथरा गई
मार डाला 'अर्श' यूं तो दोस्तों के लुत्फ़ ने
ये ग़नीमत है कि आखिर ज़िन्दगी काम आ गई

(१६५२)

◇ ◇ ◇

---

१. यौवन २. दुखित ३. इच्छा का न होना ४. विफल इच्छा से ५. अफ़सोस ६. शिक्षाप्रद ७. आशिक़ी का वर्णन ८. आशा-निराशा के बिना ९. जीवन-रहस्य १०. समस्याएं ११. निशाना १२. प्रयत्न की असफलता का १३. प्रकट १४. देखने की १५. प्रतीक्षा करने वाली आंख

दिल-ए-फ़सुर्दा पे[1] सौ बार ताज़गी आई
मगर वो याद कि जाकर न फिर कभी आई
चमन में कौन है पुरसान-ए-हाल[2] शबनम का
ग़रीब रोई तो ग़ुञ्चों को भी हँसी आई
नवेद-ए-ऐश से[3] भी लुत्फ़-ए-ऐश[4] मिल न सका
लिबास-ए-ग़म में[5] ही आई अगर ख़ुशी आई
किसी तरह भी ज़माने को बस में कर न सके
न दोस्ती न हमें रास दुश्मनी आई
अजब न था कि ग़म-ए-दिल शिकस्त खा जाता
हज़ार शुक्र तेरे लुत्फ़ में कमी आई
ज़माना हँसता है मुझपर हज़ार बार हँसे
तुम्हारी आंख में लेकिन ये क्यों नमी आई
दिये जलाए उमीदों ने दिल के गिर्द बहुत
किसी तरफ़ से न इस घर में रोशनी आई
हज़ार दीद पे पाबन्दियां थीं, पर्दे थे
निगाह-ए-शौक़ मगर उनको देख ही आई
ये इन्तिक़ाम-ए-मशीयत नहीं तो और है क्या
हमारे हिस्से में दुनिया की दोस्ती आई
किसी तरह न मिटा 'अर्श' दाग़-ए-कुफ़्र-ए-अना
हमारे काम न सिज्दे न बन्दगी आई

(१९५२)

० ० ०

---

१. उदास दिल पर २. हाल पूछने वाला ३. ऐश के निमंत्रण से
४. ऐश का आनन्द ५. ग़म के वस्त्रों में

ये दुनिया है इसे दारुल-फ़तन[१] कहना ही पड़ता है
यहां हर राहबर को[२] राहज़न[३] कहना ही पड़ता है
वुफ़ूर-ए-अक़्ल-ए-इन्सां से[४] बढ़ी इन्सां-कुशी[५] इतनी
वुफ़ूर-ए-अक़्ल को[६] दीवानापन कहना ही पड़ता है
हमारा ज़िक्र भी इसमें है ग़ैरों का चहकना भी
तुम्हारी अंजुमन को अंजुमन कहना ही पड़ता है
वो सहरा[७] जिसमें कट जाते हैं दिन याद-ए-बहारां से[८]
ब-अल्फ़ाज़-ए-दिगर[९] उसको चमन कहना ही पड़ता है
बुतान-ए-संगदिल में[१०] है नज़ाकत का भी इक पहलू
उन्हें सीमीं-बदन[११], गुल-पैरहन[१२], कहना ही पड़ता है
इसी सूरत से कम होता है कुछ आज़ार गुरबत का
दियार - ए - ग़ैर को अपना वतन कहना ही पड़ता है
यहां कितनों के जी छूटे, यहां कितनों के दम टूटे
वफ़ा की राह को हिम्मत-शिकन कहना ही पड़ता है
बुरा क्या है जो हुस्न - ए - सादा को पुरफ़न कहा हमने
खिज़र को भी तो अक्सर राहज़न कहना ही पड़ता है
ज़बां समझे न समझे कोई अपनी 'अर्श' इस पर भी
वतन अपना है ये, इसको वतन कहना ही पड़ता है

◇ ◇ ◇

---

१. मायावी संसार २. पथ-प्रदर्शक को ३. लुटेरा ४. मानव-बुद्धि के आधिक्य से ५. मानव-वध ६. बुद्धि के आधिक्य को ७. मरुस्थल ८. वसन्त ऋतु की याद से ६. अन्य शब्दों में १०. पत्थर-दिल सुन्दरियों में ११. चांदी के वदन वालियां १२. फूलों के वस्त्रों वालियां

रुबाइयां

क्यों इतना परीशां है निशेमन के लिए[1]
अल्ला से दुआ मांग तू गुलशन के लिए
इक दाने की खातिर ये तेरी घबराहट
बेताब[2] उधर बर्क़[3] है खिरमन[4] के लिए

◇ ◇ ◇

तूफ़ां[5] के तलातुम में[6] किनारा क्या है
गिर्दाब में[7] तिनके का सहारा क्या है
सोचा भी है ऐ ज़ीस्त पे[8] मरने वाले
मिटती हुई मौजों का[9] इशारा क्या है

◇ ◇ ◇

इश्रत में[10] भी दिलशाद[11] नहीं हैं हम लोग
बेगाना-ए-फ़र्याद नहीं हैं हम लोग
है साथ गुनाहों के खयाल-ए-रहमत
इस्यां में भी आज़ाद नहीं हैं हम लोग

◇ ◇ ◇

दिल में तेरे ऐ शैख ये क्या बैठा है
क्यों अज़मत-ए-रिंदी को भुला बैठा है
जो नक़्द मिले उनको बताता है हराम
क्यों झूट पे तू उधार खा बैठा है

◇ ◇ ◇

१. घोंसले के लिए २. बेचैन ३. बिजली ४. खलिहान ५. तूफ़ान ६. लहरों के टकराव में ७. भंवर में ८. जीवन पर ९. लहरों का १०. ख में ११. प्रसन्न

बेकैफ़ है बेकैफ़ शराब - ए - हस्ती
इक साज़-ए-शिकस्ता है रबाब-ए-हस्ती[1]
हर बाब का[2] उन्वान[3] फ़ना है इस में
नाक़ाबिल-ए-दर्स[4] है किताब-ए-हस्ती

◇ ◇ ◇

तू सोज़ - ए - हक़ीक़ी है, मैं परवाना हूं
तू बादा-ए-गुलरंग[5], मैं पैमाना हूं
तू रूह है, मैं जिस्म हूं, तू अस्ल है मैं नक़्ल
जिसमें है बयां तेरा, वो अफ़साना हूं

◇ ◇ ◇

अन्फ़ास को[6] समझा है मदार-ए-हस्ती[7]
ओ बेख़बर - ए - रस्म - ए - दियार - ए - हस्ती[8]
तू मौत को देता है ख़िज़ां से निस्बत[9]
है मौत ही दर - अस्ल बहार-ए-हस्ती

◇ ◇ ◇

इदराक का[10] ये वह्म टले तो अच्छा
ये इल्म का बूटा न फले तो अच्छा
बुझ जाएगा ऐ दोस्त चिराग़-ए-इर्फ़ां[11]
ये सरसर-ए-दानिश[12] न चले तो अच्छा

◇ ◇ ◇

---

१. जीवन का बाजा २. परिच्छेद का ३. शीर्षक ४. पढ़ने के अयोग्य ५. पुष्पवर्णा मदिरा ६. श्वासों को ७. जीवन का आधार ८. जीवन-रूपी घर की रीति से बेखबर ९. सम्बंधित करता है १०. बुद्धि का ११. ज्ञान का दीपक १२. बुद्धि की विषाक्त वायु

गो इल्म से बाहर कोई इम्कान[1] नहीं
बेइल्म-ए-यक़ीं[2] इल्म में भी जान नहीं
ये भूल-भुलैयां मेरी आगाही की[3]
जिस घर में हों खुद उसकी भी पहचान नहीं

◇ ◇ ◇

अश्कों में नदामत को[4] समो लेता हूं
पिंदार के[5] हर दाग़ को धो लेता हूं
इससे तो हसींतर[6] थी शबीह-ए-वहशत[7]
तस्वीर-ए-ख़िरद[8] देख के रो लेता हूं

◇ ◇ ◇

दिन-रात खुली रहती हैं राहें दिल की
तकती हैं किसे रोज़ निगाहें दिल की
ये किसका तसव्वुर है, ये किसका है खयाल
रोके से जो रुकती नहीं आहें दिल की

◇ ◇ ◇

ये हस्ती-ओ-नेस्ती[9] का झगड़ा क्या है
ये मर्ग-ओ-हयात[10] का तमाशा क्या है
हम खुद को समझने से हैं क़ासिर[11] ऐ 'अर्श'
क्योंकर ये बतायें कि ये दुनिया क्या है

◇ ◇ ◇

---

१. संभावना २. विश्वास-युक्त ३. जानकारी या ज्ञान की ४. लज्जा को ५. आत्म-सम्मान के ६. अधिक सुन्दर ७. पशुता का रूप ८. बुद्धि का चित्र या रूप ९. अस्तित्व-अनस्तित्व १०. मरण-जीवन ११. असमर्थ

साक़ी ने किया दौर-ए-मै-ए-नाब[1] शुरू
भागें मेरी महफ़िल से सुजूद और रुकूअ़[2]
गुल कर दो ज़रा शम्मअ़-ए-सर-ए-मैख़ाना[3]
होता है मेरे जाम से[4] ख़ुर्शीद[5] तुलूअ़[6]

◇ ◇ ◇

रिंदों से[7] ये नफ़रत ये कुदूरत[8] बेकार
आलूदा-ए-तक़दीस[9] नहीं ये ज़िनहार[10]
ज़ोहरा[11] से कहो आए ज़मीं पर नाचे
इन्सां हैं फ़रिश्ते नहीं हर्गिज़ मैख़्वार

◇ ◇ ◇

साक़ी ! ग़म-ए-दुनिया से हज़र जाम पिला
मरने का नहीं मुझको ख़तर, जाम पिला
जीने की दुआ़यें जो बुज़ुर्गों से मिलीं
ले वो भी तेरी नज़र, मगर जाम पिला

◇ ◇ ◇

हद कर न मुक़र्रर मेरी बेहोशी की
कुछ शर्म भी रख अपनी ख़तापोशी की
पायान-ए-करम एक फ़क़त एक ही जाम
तौहीन न कर मेरी बलानोशी की

◇ ◇ ◇

. शराब का दौर २. नमाज़ के तौर पर किये जाने वाले सिज्दे ३. मधुशाला का चिराग़ ४. प्याले से ५. सूरज ६. उदय ७. मद्यपों से ८. मैला मन ९. पवित्रता से मलिन १०. कभी भी ११. शुक्र तारा

बिछड़े हुए अहबाब[1] जो मिल जाते हैं
चाक-ए-दिल-ए-अफ़सुर्दा[2] भी सिल जाते हैं
पीकर जो निकल जाता हूं मैं सू-ए-चमन[3]
गुञ्चे मेरी ताअ़ज़ीम में[4] खिल जाते हैं

◇ ◇ ◇

मुझ रिंद को बख़्शी जो शराब ऐ साक़ी
दुनिया में नहीं तेरा जवाब ऐ साक़ी
हर क़तरा मेरे हक़ में करम की बारिश
अब जाम का तू करले हिसाब ऐ साक़ी

◇ ◇ ◇

साक़ी ने कहा ग़ैरत-ए-नाहीद[5] हूं मैं
मय बोल उठी जल्वा-ए-उम्मीद[6] हूं मैं
साग़र से छलक कर जो ज़मीं तक पहुंची
हर ज़र्रा पुकार उट्ठा कि ख़ुर्शीद हूं मैं

◇ ◇ ◇

मग़रिब से उमंडते हुए बादल आए
भीगी हुई रुत और सुहाने साए
साक़ी, लब-ए-जू[7], मुतरिब-ए-नौख़ेज़[8], शराब
है कोई जो वाइज़ को बुलाकर लाए

◇ ◇ ◇

---

१. मित्र २. उदास दिल के छिद्र ३. बाग़ की ओर ४. सम्मान में ५. (ज़ोहरा) सितारे का आत्म-सम्मान ६. आशा का जल्वा ७. नदी का किनारा ८. युवा गायक

रिंदों के लिए मंज़िल-ए-राहत है यही
मैख़ाना-ए-पुरकैफ़, मसर्रत है यही
पीकर तो ज़रा सैर-ए-जहां कर ऐ शैख़
तू ढूंडता है जिसको वो जन्नत है यही

◇ ◇ ◇

हर ज़र्फ़[1] को अंदाज़े से तोल ऐ साक़ी
ये बुख़्ल-भरे[2] बोल न बोल ऐ साक़ी
मय[3] और तेरी तल्ख़ - नवाई[4] ! तौबा
ये ज़ह्र न इस शहद में घोल ऐ साक़ी

◇ ◇ ◇

फ़िर्दौस के[5] चश्मों की रवानी पे न जा
ऐ शैख़ तू जन्नत की कहानी पे न जा
इस वह्म को छोड़ अपने बुढ़ापे ही को देख
हूरान - ए - बहिश्ती की[6] जवानी पे न जा

◇ ◇ ◇

तू आतिश-ए-दोज़ख़ का[7] ख़तावार[8] कि मैं
तू सबसे बड़ा मुल्हिद-ओ-ऐयार[9] कि मैं
अल्ला को भी बना दिया हूर - फ़रोश[10]
ऐ शैख़ बता तू है गुनहगार कि मैं

◇ ◇ ◇

---

१. पात्र २. कंजूसी से भरे ३. शराब ४. कटु भाषण ५. जन्नत के ६. जन्नत की हूरों की ७. दोज़ख़ की आग का ८. दंड का भागी ९. धर्मभ्रष्ट और धोखेबाज़ १०. हूरें बेचने वाला

फुटकर

ऐ 'अर्श' ज़ख़्म-ए-दिल ही से है कायनात-ए-दिल[1]
अच्छा हुआ कि ज़ख़्म ये अच्छा न हो सका

◇ ◇ ◇

अजब क्या है जो ख़ामोशी ही शरह-ए-आरज़ू[2] कर दे
मेरे लब से[3] तो इज़्हार-ए-तमन्ना[4] हो नहीं सकता

◇ ◇ ◇

जवानी, मुहब्बत, वफ़ा, ना-उमीदी
ये है मुख़्तसर-सा[5] हमारा फ़साना
किये दिल ने हर इक जगह तुझको सिज्दे
जबीं[6] ढूंडती ही रही आस्ताना[7]

◇ ◇ ◇

बयान-ए-इश्क़ में रुक-रुक के चलती है ज़बां मेरी
सुनाऊं क्या बहुत सब्र-आज़मा[8] है दास्तां मेरी
किसीके सामने देखे कोई मजबूरियां मेरी
कि अपनी दास्तां कहने से आजिज़[9] है ज़बां मेरी
मेरे मरने में भी मुज़्मर[10] हैं लाखों राज़ जीने के
बहुत दिलचस्प है, गो मुख़्तसर है, दास्तां मेरी

◇ ◇ ◇

---

१. दिल की दुनिया २. मनोकामना की व्याख्या ३. होंटों से
४. इच्छा की अभिव्यक्ति ५. संक्षिप्त-सा ६. माथा (बुद्धि) ७. दहलीज़
८. धैर्य की परीक्षा लेने वाली ९. असमर्थ १०. निहित

ज़िक्र-ए-बर्बादी-ए-आलम पे[1] है पुरनम[2] हर आंख
ये भी इक जुज़्व[3] है शायद मेरे अफ़साने का
तूने जो बंद किये खोल दिये उसने वो राज़[4]
तुझसे भी बढ़के है रुत्बा[5] तेरे दीवाने का
ज़िन्दगी कशमकश-ए-इश्क़ के[6] आग़ाज़ का[7] नाम
मौत अंजाम उसी दर्द के अफ़साने का

◇ ◇ ◇

गो शामिल-ए-हाल[8] उनका करम[9] भी नहीं होता
लेकिन ये सितम है कि सितम भी नहीं होता
बढ़ता नहीं गो दर्द-ए-मुहब्बत मेरे दिल में
लेकिन ये मुसीबत है वो कम भी नहीं होता
नाकामी-ए-पैहम से है मानूस मेरा दिल
अब तो मुझे इस बात का ग़म भी नहीं होता

◇ ◇ ◇

खयाल-ए-तामीर के असीरो करो न तखरीब की बुराई
ब-ग़ौर देखो तो दुश्मनी के क़रीब ही दोस्ती मिलेगी
खिरद को बेमाया कर न इतना ये ज़ुहद कैसा ये बन्दगी क्या
खिरद का इफ़लास दूर होगा तो दौलत-ए-आगही मिलेगी
इताब करने दो 'अर्श' उनको कि इसमें भी मस्लहत निहां है
मिज़ाज को बर्हमी मिलेगी तो हुस्न को दिलकशी मिलेगी

◇ ◇ ◇

---

१. संसार की बर्बादी की चर्चा पर २. सजल ३. अंग ४. भेद
५. पद ६. इश्क़ की उलझनों के ७. प्रारंभ का ८. हितकर ९. कृपा

ज़िन्दगी उन्वान-ए-अफ़साना[1] भी अफ़साना भी है
तुझको ऐ दिल खुद तड़पकर उनको तड़पाना भी है
अक़्ल वाले तो उठा सकते नहीं बार-ए-जुनूं[2]
क्या कोई ऐ अहल-ए-महफ़िल[3] तुममें दीवाना भी है

◇ ◇ ◇

ये सच है ज़ब्त में जी को डुबोया भी नहीं जाता
मगर अब तो ये आलम है कि रोया भी नहीं जाता
ख़ुशी आए तो ग़म को भूल जाना ही मुनासिब है
मगर ग़म को मसर्रत में समोया भी नहीं जाता
दिल-ए-खुद्दार दामान-ए-वफ़ा पर दाग़ है बेशक
मगर ये दाग़ ऐसा है कि धोया भी नहीं जाता
अगर साहिल नहीं मिलता तो ये कम-हिम्मती कैसी
भंवर में क्या सफ़ीने को[4] डुबोया भी नहीं जाता

◇ ◇ ◇

ख़ाना-ए-दिल में[5] दाग़ जल न सका
इसमें कोई चिराग़ जल न सका
न हुए वो शरीक-ए-सोज़-ए-निहाँ[6]
दिल से दिल का चिराग़ जल न सका

◇ ◇ ◇

---

१. कहानी का शीर्षक २. उन्माद का बोझ ३. महफ़िल वालो
४. नौका को ५. दिल-रूपी घर में ६. भीतरी ज्वाला में भागीदा

तवाज़ुन[1] ख़ूब ये इश्क़-ओ-सज़ा-ए-इश्क़ में देखा
तबीयत एक बार आई, मुसीबत बार-बार आई
सहारा मौत ने आकर दिया तो कब दिया हमको
हमारी ज़िन्दगी जब दिन मुसीबत के गुज़ार आई

◇ ◇ ◇

दिल है लेकिन दिल में कोई ग़म नहीं
ये मुसीबत भी तो आख़िर कम नहीं
हर पराए ग़म पे दिल रोता रहा
अब तो अपना भी उसे मातम नहीं

◇ ◇ ◇

छूकर ही जिसे आतिश-ए-दोज़ख़[2] हुई ठंडी
दामन ये किसी रिंद का[3] दामन तो नहीं है
मन्ज़ूर है कुछ जांच तेरे अज़्म की[4] इसको
दरअस्ल ज़माना तेरा दुश्मन तो नहीं है

◇ ◇ ◇

अर्श तक[5] देखिये पहुंचे कि न पहुंचे कोई
आह के साथ दुआ भी मेरी परवाज़ में है[6]

◇ ◇ ◇

---

१. संतुलन २. दोज़ख़ की आग ३. मद्यप का ४. संकल्प की
५. आकाश तक ६. उड़ान में है